त्रैमासिक
मूल्य : 20 रुपए
अप्रैल-जून, 2014

कोंपल

अप्रैल–मई–जून की कुछ महत्वपूर्ण तिथियाँ

8 अप्रैल (1857)

1857 के स्वाधीनता संग्राम के प्रथम विद्रोही मंगल पाण्डे को ब्रिटिश हुकूमत द्वारा फाँसी

8 अप्रैल (1929)

'बहरों को सुनाने के लिए धमाके की जरूरत होती है', इस उद्घोष के साथ भगतसिंह और बटुकेश्वर दत्त ने दिल्ली की सेंट्रल असेम्बली में बम फेंका

9 अप्रैल (1893)

महापण्डित राहुल सांकृत्यायन का जन्मदिवस

13 अप्रैल (1893)

जालिम रौलट एक्ट के विरोध में अमृतसर के जालियाँवाला बाग में शान्तिपूर्ण सभा कर रहे लोगों पर ब्रिटिश फौज के जनरल डायर ने अंधाधुंध गोलियाँ चलवाईं जिससे सैकड़ों स्त्री–पुरुष व बच्चे मारे गये। इस दिन को जगह–जगह दमन विरोधी दिवस के रूप में मनाया जाता है।

14 अप्रैल (1963)

महापण्डित राहुल सांकृत्यायन की पुण्यतिथि

18 अप्रैल

चटगाँव विद्रोह । बंगाल (अब बंगलादेश) के चटगाँव शहर में मास्टर सूर्यसेन के नेतृत्व में तरुण क्रान्तिकारियों के दल ने ब्रिटिश शासन के खिलाफ विद्रोह कर दिया और शस्त्रागार पर कब्जा कर लिया।

22 अप्रैल (1870)

रूसी क्रान्ति के महान नेता व्लादिमीर इलिच लेनिन का जन्मदिवस

1 मई

अन्तरराष्ट्रीय मजदूर दिवस : 8 घण्टे काम के दिन की माँग को लेकर 1886 में शिकागो में शहीद हुए मजदूरों की याद में इस दिन दुनिया भर के श्रमिक अपने हक के लिए लड़ने का संकल्प लेते हैं।

5 मई (1818)

कम्युनिस्ट विचारधारा के संस्थापक महान चिन्तक और क्रान्तिकारी कार्ल मार्क्स का जन्मदिवस

5 मई (1911)

चटगाँव विद्रोह की नायिका–प्रीतिलता वाडेदार का जन्मदिवस

8 मई

गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर का जन्मदिवस

10 मई

अंग्रेज हुक्मरानों के खिलाफ, 1857 में प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की शुरुआत।

17 मई

महान गणितज्ञ और चिन्तक बर्ट्रेण्ड रसेल का जन्मदिवस

19 मई

वियतनाम के महान क्रान्तिकारी नेता हो चि मिन्ह का जन्मदिवस

25 मई

महान बंगला कवि काजी नजरुल इस्लाम का जन्मदिवस

28 मई (1929)

भगतसिंह के वरिष्ठ साथी, हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन के नेता भगवतीचरण वोहरा बम का परीक्षण करते समय शहीद हो गये

11 जून (1857)

महान देशभक्त क्रान्तिकारी, काकोरी केस के शहीद रामप्रसाद बिस्मिल का जन्मदिवस

कोंपल

त्रैमासिक, वर्ष 1, अंक 2
अप्रैल - जून 2014

संस्थापक
(स्व.) कमला पाण्डेय

सम्पादक
गीतिका

सज्जा
रामबाबू

सम्पादकीय कार्यालय
डी-68, निरालानगर
लखनऊ-226020
फोन : 0522-2786782

इस अंक का मूल्य : 20 रुपये
वार्षिक सदस्यता : 100 रुपये
(डाक व्यय सहित)
आजीवन सदस्यता : 2000 रुपये

स्वत्वाधिकारी अनुराग ट्रस्ट के लिए गीतिका द्वारा डी-68, निराला नगर, लखनऊ से प्रकाशित तथा लक्ष्मी ऑफसेट प्रेस, इन्दिरानगर, लखनऊ से मुद्रित।
सम्पादन एवं प्रकाशन पूर्णतः स्वैच्छिक तथा अवैतनिक

इस अंक में

हमारी बात

प्यारे बच्चो,

'कोंपल' के पहले अंक को आप सबने खूब पसन्द किया, यह हमारे लिए खुशी की बात है। इस अंक के बारे में हमें आप सबकी चिट्ठियों का इन्तज़ार रहेगा।

बहुत सारे बच्चे 'कोंपल' और इससे पहले निकलने वाली 'अनुराग बाल पत्रिका' को पढ़कर इसके बारे में उन साथियों को ज़ुबानी अपनी राय बताते हैं जो उनके स्कूलों, कालोनियों और बस्तियों में इस पत्रिका को लेकर जाते हैं। आपकी राय हम तक पहुँच जाती है। लेकिन अगर आप खुद से हमें चिट्ठी लिखेंगे तो हमें बहुत अच्छा लगेगा।

'कोंपल' अभी ज़मीन से निकले नन्हे पौधे की नयी-नयी कोंपल की तरह है। धीरे-धीरे यह और विकसित होगी, बढ़ेगी, फलेगी-फूलेगी, और अपने नये-नये दोस्त बनायेगी। आप सबके सुझाव, आपको इसमें क्या अच्छा लगा और क्या पसन्द नहीं आया, इन सबके बारे में जानने से हमें इसे और भी बेहतर बनाने में मदद मिलेगी।

अगली बार और भी मज़ेदार कहानियों और जानकारियों के साथ मुलाकात होगी।

– तुम्हारी दीदी

तुम्हारी बात

मैं जब पाँचवी क्लास में थी तभी से 'अनुराग बाल पत्रिका' पढ़ रही हूँ। जब मुझे पता चला कि अब 'अनुराग' नहीं निकलेगी तो मुझे बहुत दुख हुआ लेकिन जब मैंने उसकी जगह पर निकलने वाली 'कोंपल' को पढ़ा तो मेरा दुख दूर हो गया। अब मुझे 'अनुराग' की तरह ही 'कोंपल' का इन्तज़ार रहता है। हम लोग अपने क्लास में खाली समय में बैठकर इसे पढ़ते हैं। – **अन्नू, शाहाबाद डेयरी, दिल्ली**

मुझे 'कोंपल' के पहले अंक में 'मालिक और मज़दूर' और 'सौदागर' कहानियाँ बहुत अच्छी लगीं। पहले की तरह इसमें इतिहास और विज्ञान की जानकारियाँ और देनी चाहिए।

– **गौरव, चण्डीगढ़**

आपकी पत्रिका में बच्चों की लिखी रचनाओं की जगह भी होनी चाहिए।

– **हुमा, अमीनाबाद, लखनऊ**

भोंबोल सरदार

(दूसरी किस्त)

अँधेरे में

खगेन्द्र नाथ मित्र

पंचायत को बरख्वास्त हुए लगभग एक प्रहर बीत चुका था। उस दिन का फुटबॉल मैच फिर न हो सका।

भरी सांझ के समय, गोपीनाथ मँदिर में आरती का घंटा बजना शुरू हो गया। घंटे की आवाज हवा पर सवार दूर-दूर तक पहुँच जाती थी। नदीपार के गाँववालों तक भी। लोग जानते हैं कि आरती के बाद बतासा मिलता है। मुहल्ले के कुछ कुछ लड़के पढ़ाई से उठकर वहाँ पहुँच जाते हैं। अगर पुजारी से तुम्हारी नज़दीकी हो तो तुम्हें एक दो बतासे अधिक मिलेंगे। पर पुजारी भी था काफी सयाना, जल्द किसी से दोस्ती न करता था।

दत्तमोशाई के घर से मानके पढ़ाई से भागकर बतासे की लालच में मंदिर पहुँचा। दलान पर चढ़कर उसने पाया कि काफ़ी लोग वहाँ पहले से ही बैठे हुये हैं। दीपस्तंभ पर रेड़ी का तेल भरा दिया जल रहा है, पर बाहर दालान के अंधेरे को पूरी तरह भगाना उसकी रोशनी के लिए संभव नहीं था, दालान में मद्धिम अंधेरा छाया हुआ है, चेहरे साफ़ नज़र नहीं आते। फिर भी जाने हुए चेहरे को पहचाना जा ही सकता है।

मानके जगह की तलाश में दालान में इधर-उधर घूम रहा था, उसकी नज़र मोटे खंभे के बगल में किसी सफ़ेद चीज़ पर अटक गई। वह कुछ देर तक देखता रहा, फिर भी कुछ

भाँप न पाया। दबे पाँव करीब पहुँचा, एक आदमी सफेद कपड़ा ओढ़कर बैठा हुआ था। उसे करीब आते देख वह शख़्स और सिमट कर बैठ गया। अचानक मानके ठठाकर हँस पड़ा, बोला – "अरे भोमला, भागकर यहाँ छुपा हुआ है तू?"

–"खामोश!"

–"क्यों? पास में तो कोई भी नहीं है, वह बोला "तुम दिनभर कहाँ थे? तुम्हें खोजते-खोजते हमलोग दिनभर कहाँ-कहाँ भटकते रहे"

– "नीलकोठी में"

भोंबोल जिस नीलकोठी का बात कर रहा था वह शहर के बाहर नदी के किनारे स्थित एक विशाल हवेलीनुमा मकान था, जो अब एक खंडहर में तब्दील हो गया था। बहुत पहले वहाँ नील का एक बड़ा कारखाना हुआ करता था। नील सड़ाने के लिए बड़े-बड़े हौज बनाये गये थे, अब झाड़ जंगल से घिरे वे हौज रह गये थे और जंग लगा एक टूटा हुआ इंजन। काफी वीरान जगह थी वह। उस पर से दो कैथ और एक घना पीपल का पेड़ मिलकर एक छायामय भुतहा परिवेश बन गया था। भरे दोपहर में भी वहाँ जाने पर एक सिहरन सी महसूस होती थी। लोग कहते हैं कि रात होने पर नीलकोठी का मालिक बुल साहब जो कब का मर चुका है, इस दालान की छत पर बैठा मिलता है, छत से अपनी लंबी टांगों को लटकाकर बेहद भारी आवाज़ में अंग्रेजी गाना गाता रहता है। फिर कभी-कभी दिन में भी हौजों के अगल बगल उग आये सियालकाँटा, कालकासुन्दी और भांटफूल

के जंगल में सफेद पतलून पहले बुल साहब हाथ में लाठी लिए घूमता रहता है।

-"तुझे डर नहीं लगता?" मानके ने पुछा

-"डर काहे का?"

तब तक आरती खत्म हो चुकी थी। पुजारी ने शंख बजाकर मंदिर का दरवाजा भीतर से बंद कर दिया। गोपीनाथ की मूर्ति को बतासा का प्रसाद चढ़ाया जा रहा था, जिस कुछ देर बाद लोगों में बांटा जायेगा।

मानके ने फिर पुछा "तुम घर नहीं जाओगे?" भोबोंल ने डपट कर जवाब दिया - "नहीं। पर तुम लोग मुझे खोज क्यों रहे थे?"

भोंबोल सोचने लगा "फिर से उस बाघ के चंगुल में!"

वह बोला - "मानके, अभी यहाँ से दफ़ा हो जा। अभी सबको पता चल जायेगा कि हम यहाँ हैं।"

-"किसी को नहीं पता चलेगा।"

भोंबोल ने दबी ज़ुबान में उसे डाँट दिया " हम बोल रहे हैं न, पता चल जायेगा! जा, दूर जाकर बैठ।"

मानके सहमकर अलग हट गया। पेट पर भोंबोल का ज़बरदस्त घूँसा खाने का उसे कोई शौक न था।
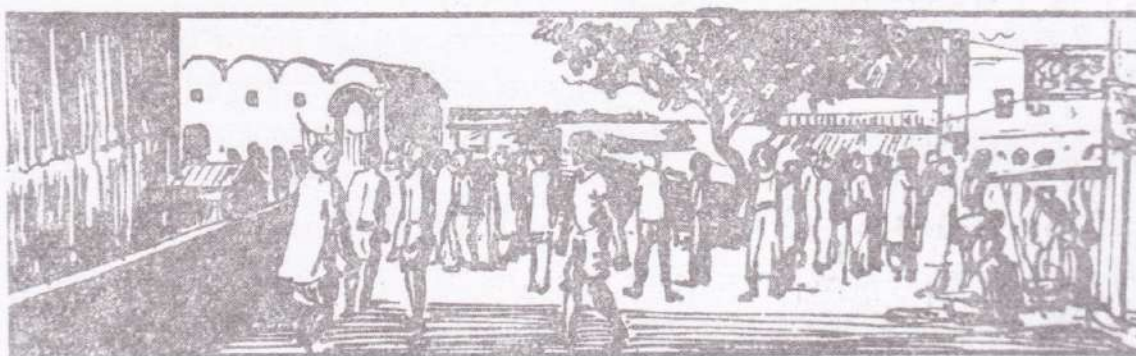
"निधु चक्रवर्ती और तुम्हारे चाचा ने ही तो हम लोगों को भेजा था।"

भोंबोल अपने चाचा से बेहद डरता था, वे चरमदारीपुर गाँव के बाबू लोगों के मुंशी थे। फिलहाल कुछ दिनों की छुट्टी लेकर घर आये हुये हैं। कल ही चले जायेंगे। इस दुर्गापुजा में उन्हें चरमदारीपुर ही रहना होगा। अभी उसी दिन की बात है, उन्होंने बाँस की फट्ठी से पीट-पीट कर भोंबोल को आंगन में सुला दिया था, पिटाई देखने के लिए राह चलने वाले सारे लोगों की भीड़ आंगन में उमड़ पड़ी थी। देह में मार का दर्द तो अब नहीं था, पर मार की शर्म वह आज भी भूल न पाया था।

भोंबोल फिर से चादर तान कर बैठ गया।

डगरा लिए पुजारी मंदिर का दरवाजा खोलकर बाहर आया। बतासा वाला डगरा। पुजारी डगरे से बतासा उठाकर सबके हाथों में डालता जा रहा था। बतासा बाँटते हुए वह अब भोंबोल के सामने खड़ा था। चादर ओढ़े हुए भोंबोल हिल रहा था। पुजारी को लगा कि कोई भक्त एकाग्रचित होकर गोपीनाथ का जाप कर रहा है। एक साथ छह बतासा उठाकर उसने कहा, "निअ" (ले लो) पुजारी उड़ीसा के पुरी जिले का रहने वाला था।

लपककर भोंबोल ने बतासा ले लिया। वह खुशी से फूले नहीं समा रहा था। एक साथ छह बतासे - वह याद नहीं कर पाया, इतने बतासे

उसे एक साथ कभी मिले हों ।

पुजारी के हटते ही मानके फिर से भोंबोल से सट गया। ''-ए भोमला, कितना बतासा मिला है रे?''

''भर मुट्ठी।''

''दिखा तो ज़रा?''

''चल हट, देखने की कोई ज़रूरत नहीं है।''

मानके ने हटते हुए धमकी देने के लहजे मे कहा ''ठीक, अब हम घर जा रहे हैं ''

''खबरदार! मेरे बारे किसी से कहा तो ''

मानके के मुँह में बतासा था, वह बोला - ''ज़रूर कह देंगे, ए ए !'' और फिर सीढ़ी से उतरकर वह अंधेरे में ग़ायब हो गया।

गोपीनाथ मंदिर के अहाते में एक तरफ दोलमंच* बना हुआ था। इस समय वह वीरान पड़ा हुआ था। दालान से उठकर भोंबल बागीचे से होते हुए दोलमंच की वेदी के पीछे जाकर परम निश्चिंतता के साथ बतासा खाने लगा।

कुछ ही देर में मंदिर का दरवाजा बंद हो गया। भक्त लोग पहले ही बतासा लेकर अपने अपने घरों में लौट गये हैं। चारों ओर अंधेरा छा गया है। झींगुर की आवाज़, जुगनुओं के उड़ते हुए स्फुलिंग, दत्तलोगों के मेढ़क भरे तालाब से आती हुई मेढ़कों की टरटराहट - भूखे भोंबोल के कानों में आवाज़ आ रही थी - टर्र-टर्र रोटी-रोटी।

उसकी आँखें अब अंधेरे में सहज हो गई थीं। इधर-उधर निगाह दौड़ते हुये अचानक उसने देखा कि एक रोशनी मानके के घर की ओर से इसी ओर बढ़ती आ रही है। उसके घर के तीन घर बाद ही तो भोंबोल का घर है!

वह रोशनी की ओर एक टक देखता रहा। हो न हो चाचा ही आ रहे हैं। भोंबोल को लगा मानके ने ज़रूर घर जाकर सबकुछ बोल दिया होगा । मन ही मन उसने गाली दी ''भूत - उल्लू - पाजी - बंदर !! ''

हाँ, अब कोई शक नहीं है। रोशनी सीधे मंदिर की ओर ही बढ़ी चली आ रही है। कोलाहल में चाचा की आवाज़ साफ़ पहचानी जा सकती थी। चाचा की वजनदार आवाज़ आई - ''भोमलाऽऽऽ''

तलाश में लोग निकल पड़े हैं।

भोंबोल ने झट से अपनी धोती कमर में कस ली। फिर दोलमंच से नीचे उतरकर सीधा रेल लाइन की ओर भागा।

(अगली किस्त - राहों पर)

बंगला से अनुवाद : **देवाशीष बराट**

*** बंगाल में दोलयात्रा (होली) के समय कृष्ण की मूर्ति को झूला झूलाया जाता है। दोलमंच वह बेदी है जिसपर कृष्ण के झुला को सजाया जाता है।**

दो चीनी लघुकथाएँ

जिज्ञासु मेमना

एक मेमना था। वह हर बात जानना चाहता था। वह बड़ा अध्ययनशील था और प्रश्नों की झड़ी लगाता रहता था।

एक दिन दोपहर को आसमान में काले बादल घिरे हुए थे। सूर्य बाबा भी काले बादलों में छिप गये थे। उमस और गर्मी थी, हवा नहीं चल रही थी। मेमना अपने बकरे दादा के साथ पहाड़ी ढलान पर घास चर रहा था। घास चरते-चरते अचानक उसने देखा कि कई अबाबीलें ज़मीन से सटे हुए उड़ रही हैं। उसकी समझ में नहीं आया। उसने सोचा : अबाबीलें तो ऊँचे खुले आसमान में उड़ान भरती हैं, आज वे इतनी नीचे क्यों उड़ रही हैं? उसने अपने बकरे दादा से सवाल किया।

बकरा दादा घास चरते हुए बोले, "नन्हें मेमने, जल्दी-जल्दी घास चर लो, अबाबीलों के नीचे उड़ने का मतलब है कि बारिश होने वाली है।"

मेमने ने बकरे दादा के आगे आकर फिर पूछा, "अबाबीलों के नीचे उड़ने से आपको यह कैसे मालूम हो जाता है कि बारिश होने वाली है?"

बकरा दादा बोले, "अबाबीलें कीड़े खाती हैं। जब मौसम साफ रहता है तो कीड़े ऊँचे आसमान में उड़ते हैं और अबाबीलें ऊँचे आसमान में ही कीड़े पकड़कर खा लेती है। जब बारिश होने वाली होती है तो हवा में नमी बढ़ जाती है और कीड़ों के पंखों पर भाप जमा हो जाती हैं, इसलिए कीड़े ऊँचाई पर नहीं उड़ पाते। फलतः नीचे उड़ते कीड़ों को खाने के लिए अबाबीलें भी नीचे उड़ती हैं।"

"हाँ, अब मैं समझ गया!" यह कहकर मेमना फिर घास चरने लगा।

मेमना और बकरा दादा भरपेट घास चरने के बाद तेजी से वापस लौटे। चलते-चलते रास्ते में अचानक मेमने ने देखा कि बहुत सी चींटिया लम्बी कतारों में मिट्टी के एक छोटे टीले पर चढ़ रही हैं। कुछ मिट्टी के छोटे कण उठाये, कुछ पेड़ के पत्ते लादे और कुछ अनाज के दाने

लिये, बिना रुके आगे बढ़ रही थी। मिट्टी के टीले पर चींटियों का एक झुण्ड घर बनाने में व्यस्त था। घर ऊँचा और मज़बूत था। यह देखकर मेमने को बड़ा अजीब लगा और उसने बकरे दादा से पूछा, ''दादाजी! जरा इधर देखिए, चींटिया किस काम में व्यस्त हैं?''

दादा ने हँसते हुए कहा, ''वे अपना घर बदल रही हैं!''

''घर बदल रही हैं? मिट्टी के टीले पर घर क्यों बना रही हैं?''

''क्योंकि बारिश होने वाली है। पहले वे निचली भूमि में बसी हुई थीं। उन्हें बारिश के पानी से डर लगता है। यदि घर ऊँची भूमि पर हो तो बारिश के पानी से कोई डर नहीं रहेगा।''

''अरे, ऐसी बात है!''

''हाँ। मेमने, अब जल्दी चलो!''

वे चलते-चलते एक छोटी सरिता के किनारे पहुँचे। मेमने ने फिर देखा कि ईल मछलियों ने अपना सिर पानी की सतह से ऊपर उठा रखा है। उसने आश्चर्य के साथ पूछा, ''दादाजी! ईल मछलियाँ तो पानी के अन्दर तैरती हैं, वे पानी की सतह पर क्यों आई हुई हैं?''

दादा आगे बढ़ते हुए बोले, ''बारिश होने वाली है, सरिता के पानी में इन छोटी ईलों को साँस लेने में मुश्किल हो रही है। वे साँस लेने के लिए पानी की सतह पर आ गयी है।''

''अरे, ऐसी बात है!'' मेमने ने कहा।

''जल्दी चलो, बारिश होने वाली है,'' बकरा दादा बोले।

मेमना अपने दादा के साथ घर की तरफ लौट रहा था। वह चलते हुए सोचने लगा, ''जब अबाबीलें नीचे-नीचे उड़ती हैं, चीटियाँ अपना घर ऊँचे स्थान पर ले जाती हैं और छोटी ईल मछलियाँ पानी की सतह पर आ जाती हैं, तब
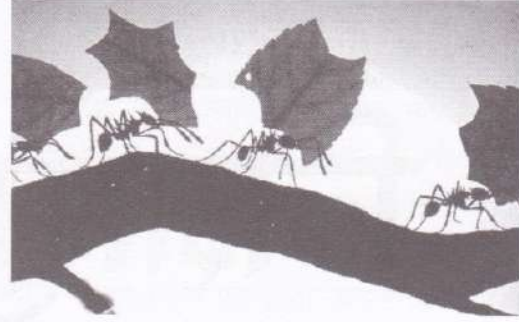
इन सबका मतलब होता है कि जल्दी ही बारिश होने वाली है।''

छोटा मेमना बकरे दादा के साथ घर लौट आया। उनके घर में दाखिल होते ही झम-झम बारिश होने लगी। मेमने ने फिर पूछा, ''दादाजी, बारिश कैसे होती है?'' बकरे दादा ने धीरज से मेमने के प्रश्न का उत्तर दिया। अपने दादा का जवाब सुनकर छोटे मेमने ने एक गीत की रचना की।

सूर्य की गर्मी पाकर
भाप बन उड़ता है जल।
भाप जमा हो आकाश में
रूप बदल बन जाता बादल।
बादल लहराते-मँडराते
और हवा का बढ़ता शोर।
भाप बनती हैं जल की बूँदें
छाती हैं घटा घनघोर।
घनघोर घटाएँ जब होती काली
जल से हो जाती हैं भारी।
घनघोर घटा पानी बनकर
रिमझिम-रिमझिम गिरती हैं।
पेड़-पहाड़ को नहलाती,
ताल-तलैया भरती हैं।

बकरे दादा के पास लेटा हुआ मेमना गीत गाते हुए बारिश की आवाज़ सुनता रहा। ''झम-झम'' करती तेज बारिश हो रही थी।

मिट्टी के तीन गोले

जाड़े के शुरू में एक दिन दोपहर के समय मौसम सुहावना था। सूरज की किरणों में गर्मी थी। नदी की सतह पर बर्फ की एक पतली तह पिघल गई। नदी के किनारे उछलता रहा फिर उसमें एक चपटी पूँछ निकल आई।

इसके साथ ही कीचड़ का दूसरा ढेर भी हिलते-डुलते उसमें से भी मिट्टी का एक छोटा गोला निकल आया। मिट्टी का यह गोला कीचड़ के ढेर से निकलकर जमीन पर उछलता रहा और उसमें चार छोटी-छोटी टाँगें निकल आई।

इसी तरह कीचड़ का तीसरा ढेर भी हिलने-डुलने लगा। हिलते-डुलते मिट्टी का एक बड़ा गोला कीचड़ के ढेर से निकलकर जमीन पर रेंगता रहा और उसमें एक गोल खोपड़ी निकल आई।

"चार टाँगों" के गोले ने "चपटी पूँछ" को देखा और बड़े आश्चर्य के पूछा, "टर्र-टर्रख तुम कौन हो?"

"चपटी पूँछ" बोली, "अरे, तुम तो नन्हे मेढ़क हो। यदि तुम्हारी आवाज़ न सुनती तो मैं सचमुच तुम्हें नहीं पहचान पाती। तुम ही बताओ, मैं कौन हूँ? क्या तुम मुझ नन्हीं बीम मछली को नहीं जानते?"

वे दोनों एक-दूसरे को कीचड़ से लिपे-पुते

देखकर जोर-जोर से हँसने लगे।

नन्हा मेढक अँगड़ाई लेते हुए बोला, ''जब ठण्ड शुरू होती है तो मैं मिट्टी के अन्दर घुसकर शीतनिद्रा में सो जाता हूँ। कभी सोचा भी नहीं था कि कीचड़ खोदने वाले मुझे भी खोदकर बाहर निकाल देंगे। अब मैं फिर से एक बार शीतनिद्रा में सो जाता हूँ। कभी सोचा भी नहीं था कि कीचड़ खोदने वाले मुझे भी खोदकर बाहर निकाल देंगे। अब मुझे फिर से एक बार शीतनिद्रा में सोने के लिए कोई जगह ढूँढ़नी पड़ेगी।''

नन्हीं बीम मछली बोली, ''मैं तो अपनी सहेलियों के साथ नदी की तली में बड़े आराम से सो रही थी कि पता नहीं कैसे मुझे यहाँ लाकर पटक दिया गया। अब मुझे जल्दी ही वापस लौट जाना है, वरना अधिक विलम्ब होने से मैं मर जाऊँगी।'' वह बात करती हुई नदी की तरफ बड़ी मुश्किल से उछलती गई ।

इसी समय मिट्टी का वह बड़ा गोला रेंगता आया। वास्तव में वह एक कछुआ था। वह जम्हाई लेते हुए बोला, ''नींद टूटने से सचमुच कितनी तकलीफ होती है, मुझे तो फिर से कीचड़ में जाकर सो जाना है। नन्हीं बीम मछली, मैं तुम्हें लादकर नदी की तली में ले चलूँगा!''

नन्हीं बीम मछली उछलकर कछुए की पीठ पर जा बैठी। कछुआ उसे लादकर नदी की तली में चल गया। नन्हे मेंढक ने भी उछलते-कूदते शीतनिद्रा में सोने की एक अच्छी जगह ढूँढ ली और वह वहाँ चैन की नींद सो गया।

दूर से हँसने की आवाज सुनाई दी। असल में नदी की मिट्टी खोदने वाले किसान वापस लौट आये थें सौभाग्य कि उन्होंने मिट्टी के इन तीन चलते-फिरते गोलों को नहीं देखा।

जानकारी
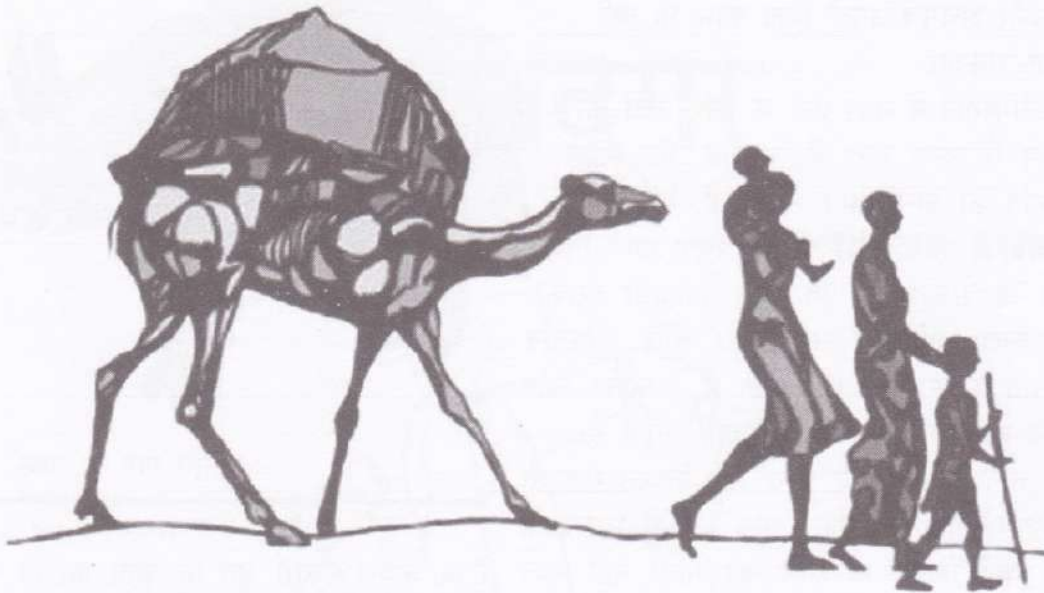
माल ढोने वाले जीव-जन्तु

माल ढोने की बात उठते ही हमारा दिमाग फौरन रेलगाड़ी, ट्रक, हवाई जहाज और नाव के बारे में सोचता है। यह सच है कि इन साधनों के जरिए तेज गति से और अधिक माल का परिवहन किया जा सकता है। इन साधनों से पर्वत और समुद्र को पार किया जा सकता है। इनमें बड़ी क्षमता निहित रहती है।

मगर जब पहले रेलगाड़ी, ट्रक, हवाई जहाज और नाव होते हुए भी कुछ ऐसे स्थान हैं, जहाँ रेलगाड़ी और ट्रक नहीं चल सकती और हवाई जहाज व नाव नहीं पहुँच सकते। ऐसे स्थानों में माल का परिवहन कैसे किया जाता है?

जीव-जन्तु मानव की सहायता कर सकते हैं। प्राचीन काल में लोग गधे, घोड़े, बैल व कुत्ते को गाड़ी खींचने और माल ढोने का प्रशिक्षण देते थे। आज भी जहाँ रेलगाड़ी, ट्रक, हवाई जहाज व नाव का प्रयोग नहीं किया जा सकता, वहाँ जीव-जन्तु अपने विशेष कौशल से मनुष्य के लिए माल का परिवहन करते हैं।

पहाड़ी गाँव में हर जगह पके हुए फल नजर आते हैं वहाँ से फल, लकड़ी, बांस, जड़ी-बूटियाँ व अन्य पहाड़ी उपजें बाहर भेजने के लिए घोड़ों

व खच्चरों का सहारा लिया जाता है। यहाँ तक कि गधा भी अपना हाथ बँटा सकता है और सचमुच उनके बिना काम भी नहीं चल सकता।

रेगिस्तान में माल ढोने के लिए ऊँटों को काम में लाया जाता है, क्योंकि ऊँट रेतीले तूफान का सामना कर सकता है, रेत में चल सकता है और कई दिनों तक बिना खाये-पिये भी रह सकता है, ट्रक और रेलगाड़ी इसका मुकाबला नहीं कर सकती है। चूँकि रेगिस्तान अनन्त सागर की तरह होता है, इसलिए लोग ऊँट को "रेगिस्तान का जहाज" कहते हैं।

चीन के छिङहाए प्रान्त और तिब्बत स्वायत्त प्रदेश के पठार का सारा रास्ता बर्फ से भरा रहता है। वहाँ किसी भी तरह की गाड़ी नहीं चल सकती। लोग सुरागाय पर माल व अनाज ढोते हैं। सुरागाय के शरीर पर मोटे-मोटे बाल होते हैं, इसलिए वह ऊँचे पर्वत की कड़ी सर्दी सहन कर सकती है। उसके खुर बड़े मज़बूत होते हैं, इसलिए वह ऊँचे पर्वत के रास्ते की फिसलन से नहीं डरती। वह बड़े आराम से पर्वत को पार करती है।

दलदली भूमि में स्थित बिल्कुल दूसरी होती है। यहाँ हर जगह कीचड़ ही कीचड़ और घास उगी होती है और बड़ा खतरा रहता है। यदि कोई जरा सी असावधानी बरते तो दलदल में फँस जाती है। यहाँ माल ढोने के लिए प्रशिक्षित बारहसिंगो का उपयोग किया जाता है। बारहसिंगा बड़ा सुन्दर जानवर है। उसके सिर पर खूबसूरत सींग होते हैं। उसके पंजे चौड़े व बड़े होते हैं, इसलिए वह दलदली भूमि में बड़े धीरज से एक-एक कदम बढ़ाता है और उसे दलदल में फँसने का कोई खतरा नहीं रहता है।

हिमाच्छादित ध्रुवीय स्थल में माल ढोने के लिए केवल उत्तरी ध्रुव के कुत्ते का ही सहारा लिया जा सकता है। इस तरह का कुत्ता सर्दी से नहीं डरता, रास्ते को पहचान कर सकता है, आदमी की बात समझता है और बड़ा सचेत रहता है। कई कुत्तों को जोतकर बर्फीली भूमि में स्की बड़ी तेजी से चल सकती है।
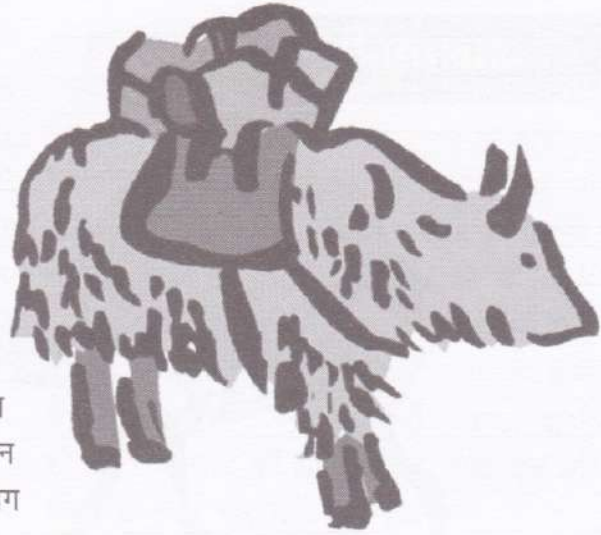
सुरा गाय या याक

गर्म प्रदेशों के जंगलों में हाथी सामान ढोने का सबसे अच्छा साधन होता है। सौ-सौ किलोग्राम भारी लकड़ी को हाथी अपनी सूँड से उठाकर जंगल से बाहर ले आता है और वह ट्रैक्टर से भी ज्यादा उपयोगी मालूम पड़ता है।

अफ्रीका में शुतुरमुर्ग सामान ढोता है। वहाँ लोग नये घर में सामान भेजते समय शुतुरमुर्ग को काम में लाते हैं और वह फर्नीचर व अन्य सामान लादकर मजबूत कदमों से नये घर की ओर जाता है।

अब तुम समझ नये होगे? हालाँकि जीव-जन्तु रेलगाड़ी, ट्रक, हवाई जहाज और नाव की तरह तेजी से नहीं दौड़ सकते, मगर उनमें विशेष योग्यता होती है।

कहानी

छोटा जादूगर

जयशंकर प्रसाद

कार्निवल के मैदान में बिजली जगमगा रही थी। हँसी और विनोद का कलनाद गूँज रहा था। मैं खड़ा था उस छोटे फुहारे के पास, जहाँ एक लड़का चुपचाप शराब पीनेवालों को देख रहा था। उसके गले में फटे कुरते के ऊपर से एक मोटी-सी सूत की रस्सी पड़ी थी और जेब में कुछ ताश के पत्ते थे। उसके मुँह पर गंभीर विषाद के साथ धैर्य की रेखा थी। मैं उसकी ओर न जाने क्यों आकर्षित हुआ। उसके अभाव में भी संपन्नता थी।

मैंने पूछा, 'क्यों जी, तुमने इसमें क्या देखा?'

'मैंने सब देखा है। यहाँ चूड़ी फेंकते हैं। खिलौनों पर निशाना लगाते हैं। तीर से नंबर छेदते हैं। मुझे तो खिलौनों पर निशाना लगाना अच्छा मालूम हुआ। जादूगर तो बिलकुल निकम्मा है। उससे अच्छा तो ताश का खेल मैं ही दिखा सकता हूँ।' उसने बड़ी प्रगल्भता से कहा। उसकी वाणी में कहीं रुकावट न थी।

मैंने पूछा, 'और उस परदे में क्या है? वहाँ तुम गए थे?'

'नहीं, वहाँ मैं नहीं जा सका। टिकट लगता है।'

मैंने कहा, 'तो चलो, मैं वहाँ पर तुमको लिवा चलूँ।' मैंने मन-ही-मन कहा, 'भाई! आज के

तुम्हीं मित्र रहे।'

उसने कहा, 'वहाँ जाकर क्या कीजिएगा? चलिए, निशाना लगाया जाए।'

मैंने उससे सहमत होकर कहा, 'तो फिर चलो, पहले शरबत पी लिया जाए।' उसने स्वीकार-सूचक सिर हिला दिया।

मनुष्यों की भीड़ से जाड़े की संध्या भी वहाँ गरम हो रही थी। हम दोनों शरबत पीकर निशाना लगाने चले। राह में ही उससे पूछा, 'तुम्हारे घर में और कौन हैं?'

'माँ और बाबूजी।"

उन्होंने तुमको यहाँ आने के लिए मना नहीं किया?'

'बाबूजी जेल में हैं।'

'क्यों?'

'देश के लिए।' वह गर्व से बोला।

'और तुम्हारी माँ?'

'वह बीमार है।'

'और तुम तमाशा देख रहे हो?'

उसके मुँह पर तिरस्कार की हँसी फूट पड़ी। उसने कहा, 'तमाशा देखने नहीं, दिखाने निकला हूँ। कुछ पैसे ले जाऊँगा, तो माँ को पथ्य दूँगा। मुझे शरबत न पिलाकर आपने मेरा खेल देखकर मुझे कुछ दे दिया होता, तो मुझे अधिक प्रसन्नता होती!'

मैं आश्चर्य से उस तेरह-चौदह वर्ष के लड़के को देखने लगा।

'हाँ, मैं सच कहता हूँ बाबूजी! माँजी बीमार हैं, इसीलिए मैं नहीं गया।'

'कहाँ?'

'जेल में! जब कुछ लोग खेल-तमाशा देखते ही हैं, तो मैं क्यों न दिखाकर माँ की दवा करूँ और अपना पेट भरूँ।'

मैंने दीर्घ निःश्वास लिया। चारों ओर बिजली के लट्टू नाच रहे थे। मन व्यग्र हो उठा। मैंने उससे कहा, 'अच्छा चलो, निशाना लगाया जाए।'

हम दोनों उस जगह पर पहुँचे जहाँ खिलौने को गेंद से गिराया जाता था। मैंने बारह टिकट खरीदकर उस लड़के को दिए।

वह निकला पक्का निशानेबाज। उसकी कोई गेंद खाली नहीं गई। देखनेवाले दंग रह गए। उसने बारह खिलौनों को बटोर लिया, लेकिन उठाता कैसे? कुछ मेरी रूमाल में बँधे, कुछ जेब में रख लिये गए।

लड़के ने कहा, 'बाबूजी, आपको तमाशा दिखाऊँगा। बाहर आइए, मैं चलता हूँ।' वह नौ-दो ग्यारह हो गया। मैंने मन-ही-मन कहा, 'इतनी जल्दी आँख बदल गई!'

मैं घूमकर पान की दुकान पर आ गया। पान खाकर बड़ी देर तक इधर-उधर टहलता-देखता रहा। झूले के पास लोगों का ऊपर-नीचे आना देखने लगा। अकस्मात् किसी ने ऊपर के हिंडोले से पुकारा, 'बाबूजी!'

मैंने पूछा, 'कौन?'

'मैं हूँ छोटा जादूगर।'

•

कलकत्ते के सुरम्य बोटैनिकल-उद्यान में लाल कमलिनी से भरी हुई एक छोटी-सी झील के किनारे घने वृक्षों की छाया में अपनी मंडली के साथ बैठा हुआ मैं जलपान कर रहा था। बातें हो रही थीं। इतने में वही छोटा जादूगर दिखाई पड़ा। हाथ में चारखाने का खादी का झोला, साफ जाँघिया और आधी बाँहों का कुरता। सिर पर मेरी रूमाल सूत की रस्सी से बँधी हुई थी। मस्तानी चाल में झूमता हुआ आकर वह कहने लगा -

'बाबूजी, नमस्ते! आज कहिए तो खेल दिखाऊँ?'

'नहीं जी, अभी हम लोग जलपान कर रहे हैं।'

'फिर इसके बाद क्या गाना-बजाना होगा, बाबूजी?'

'नहीं जी, तुमको....' क्रोध से मैं कुछ और कहनजा रहा था। श्रीमतीजी ने कहा, 'दिखलाओ जी, तुम तो अच्छे आए। भला, कुछ मन तो बहले।' मैं चुप हो गया, क्योंकि श्रीमतीजी की वाणी में वह माँ की-सी मिठास थी, जिसके सामने किसी भी लड़के को रोका नहीं जा सकता। उसने खेल आरंभ किया।

उस दिन कार्निवल के सब खिलौने उसके खेल में अपना अभिनय करने लगे। भालू मनाने लगा। बिल्ली रूठने लगी। बंदर घुड़कने लगा। गुड़िया का ब्याह हुआ। गुड्डा वर काना निकला। लड़के की वाचालता से ही अभिनय हो रहा था। सब हँसते लोट-पोट हो गए।

मैं सोच रहा था। बालक को आवश्यकता ने कितना शीघ्र चतुर बना दिया। यही तो संसार है।

ताश के सब पत्ते लाल हो गए। फिर सब काले हो गए। गले की सूत की डोरी टुकड़े-टुकड़े होकर जुड़ गई। लट्टू अपने से नाच रहे थे। मैंने कहा, 'अब हो चुका। अपना खेल बटोर लो, हम लोग भी अब जाएँगे।'

श्रीमतीजी ने धीरे से उसे एक रुपया दे दिया। वह उछल उठा।

मैंने कहा, 'लड़के!'

'छोटा जादूगर कहिए। यही मेरा नाम है। इसी से मेरी जीविका है।'

मैं कुछ बोलना ही चाहता था कि श्रीमतीजी ने कहा, 'अच्छा, तुम इस रुपए से क्या करोगे?'

'पहले भरपेट पकौड़ी खाऊँगा। फिर एक सूती कंबल लूँगा।'

मेरा क्रोध अब लौट आया। मैं अपने पर बहुत क्रुद्ध होकर सोचने लगा, 'ओह! कितना स्वार्थी हूँ मैं। उसके एक रुपया पाने पर मैं ईर्ष्या करने लगा था न!'

वह नमस्कार करके चला गया। हम लोग लता-कुंज देखने के लिए चले।

उस छोटे से बनावटी जंगल में संध्या साँय-साँय करने लगी थी। अस्ताचलगामी सूर्य की अंतिम किरण वृक्षों की पत्तियों से विदाई ले रही थी। एक शांत वातावरण था। हम लोग धीरे-धीरे मोटर से हावड़ा की ओर आ रहे थे।

रह-रहकर छोटा जादूगर स्मरण हो आता था। तभी सचमुच वह एक झोंपड़ी के पास कंबल कंधे पर डाले मिल गया। मैंने मोटर रोककर उससे पूछा, 'तुम यहाँ कहाँ?'

'मेरी माँ यहीं है न! अब उसे अस्पताल वालों ने निकाल दिया है।' मैं उतर गया। उस झोंपड़ी में देखा तो एक स्त्री चिथड़ों से लदी हुई काँप रही थी।

छोटे जादूगर ने कंबल ऊपर से डालकर उसके शरीर से चिमटते हुए कहा, 'माँ!'

मेरी आँखों से आँसू निकल पड़े।

बड़े दिन की छुट्टी बीत चली थी। मुझे अपने ऑफिस में समय से पहुँचना था। कलकत्ते से मन ऊब गया था। फिर भी चलते-चलते एक बार उस उद्यान को देखने की इच्छा हुई। साथ-ही-साथ जादूगर भी दिखाई पड़ जाता तो और भी.... मैं उस दिन अकेले ही चल पड़ा। जल्द लौट आना था।

दस बज चुके थे। मैंने देखा कि उस निर्मल धूप में सड़क के किनारे एक कपड़े पर छोटे जादूगर का रंगमंच सजा था। मैं मोटर रोककर उतर पड़ा। वहाँ बिल्ली रूठ रही थी। भालू मनाने चला था। ब्याह की तैयारी थी, यह सब होते हुए भी जादूगर की वाणी में वह प्रसन्नता
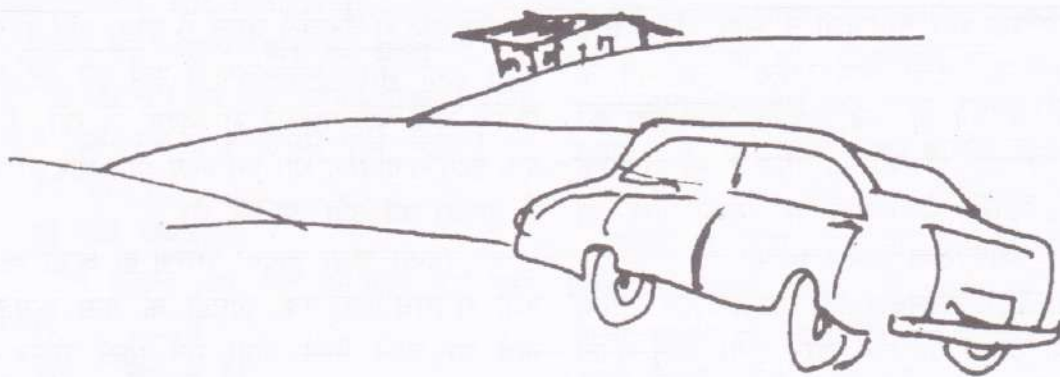
की तरी नहीं थी। जब वह औरों को हँसाने की चेष्टा कर रहा था, तब जैसे स्वयं काँप जाता था। मानो उसके रोएँ रो रहे थे। मैं आश्चर्य से देख रहा था। खेल हो जाने पर पैसा बटोरकर उसने भीड़ में मुझे देखा। वह जैसे क्षण भर के लिए स्फूर्तिमान हो गया। मैंने उसकी पीठ थपथपाते हुए पूछा, 'आज तुम्हारा खेल जमा क्यों नहीं?'

'माँ ने कहा है कि आज तुरंत चले आना। मेरी अंतिम घड़ी समीप है।' अविचल भाव से उसने कहा।

'तब भी तुम खेल दिखलाने चले आए!' मैंने कुछ क्रोध से कहा। मनुष्य के सुख-दु:ख का माप अपना ही साधन तो है। उसके अनुपात से वह तुलना करता है।

उसके मुँह पर वहीं परिचित तिरस्कार की रेखा फूट पड़ी।

उसने कहा, 'क्यों न आता?'

और कुछ अधिक कहने में जैसे वह अपमान का अनुभव कर रहा था।

क्षण भर में मुझे अपनी भूल मालूम हो गई। उसके झोले को गाड़ी में फेंककर उसे भी बैठाते हुए मैंने कहा, 'जल्दी चलो।' मोटरवाला मेरे बताए हुए पथ पर चल पड़ा।

कुछ ही मिनटों में मैं झोंपड़े के पास पहुँचा। जादूगर दौड़कर झोंपड़े में माँ-माँ पुकारते हुए घुसा। मैं भी पीछे था, किंतु स्त्री के मुँह से, 'बे...' निकलकर रह गया। उसके दुर्बल हाथ उठकर गिर गए। जादूगर उससे लिपटा रो रहा था। मैं स्तब्ध था। उस उज्ज्वल धूप में समग्र संसार जैसे जादू-सा मेरे चारों ओर नृत्य करने लगा।

विज्ञान

पृथ्वी का छोर कहाँ है?

• पावेल क्लुशान्त्सेव

वसंत ऋतु में खुले मैदान में कितना अच्छा लगता है! फूलों की सुगन्ध आती है; हवा बिल्कुल साफ होती है और चारों ओर दूर-दूर तक सब कुछ दिखायी देता है।

अगर किसी टीले पर चढ़ जाओ तो और भी दूर तक दिखायी देता है। दूर वहाँ खेत खत्म हो रहे हैं, उनके आगे जंगल है। पास ही झील चमक रही है, बल खाती राह चली गयी है। वहाँ आगे फिर खेत है, मैदान है। उनके आगे, शायद, फिर से जंगल होगा, सड़कें, झीलें, नदियाँ, नगर होंगे।

लगता है कि पृथ्वी एक बहुत ही बड़े सपाट थाल जैसी है। लगता है न?

ऊपर से आकाश ने एक विराट छत की

भाँति इस थाल को ढक रखा है। दिन में यह छत आसमानी होती है, रात में काली और तब उस पर तारे चमकने लगते हैं, जैसे कि बहुत दूर कहीं जलती बत्तियाँ।

लगता है कि यह छत विशाल गुम्बद है और इस गुम्बद के सिरे सपाट थाल पर - पृथ्वी पर टिके हुए हैं। और यदि हम देर तक पृथ्वी पर एक ही दिशा में चलते जायें तो उस स्थान तक पहुँच जायेंगे, जहाँ ''धरती और आकाश मिलते हैं''। तुमने शायद वह बौने घोड़े की कहानी सुनी हो - कैसे वह इवान को अपनी पीठ पर बिठाकर वहाँ ले गया जहाँ धरती और आकाश मिलते हैं और बस फिर इवान आकाश पर उड़ने लगा।

कितना अच्छा होता अगर सचमुच ही ऐसा होता। तुम पृथ्वी पर चलते जा रहे हो, फिर पहाड़ पर चढ़ जाते हो, कोई छोटी सी नाली लाँघते हो और आगे बादलों पर चलने लगते हो। ऊपर से जंगलों-मैदानों का नजारा देखते जाओ, उनके बीच अपना घर ढूँढो।

अफसोस, मगर ऐसा नहीं हो सकता।

लेकिन पुराने जमाने में लोग सोचते थे कि यह सम्भव है। पूरी गम्भीरता से वे ऐसा सोचते थे। उन्हें विश्वास था कि आकाश एक बहुत बड़ा उलटाया हुआ प्याला है, और पृथ्वी विराट थाल है, जिसका छोर भी है, जैसे कि हर थाल का होता है।

बेशक, उन्हें यह जानने का बहुत कौतूहल होता था कि वहाँ ''पृथ्वी के छोर के पार'', ''आसमान के उस ओर'' क्या है?

लेकिन बहुत दूर-दूर तक जाने पर भी लोगों को पृथ्वी का छोर कहीं दूर तक से नज़र नहीं आया।

तब लोगों ने यह सोचा कि हो न हो यह थाल, जिस पर हम रहते हैं, अत्यधिक बड़ा है। शायद इसका छोर बहुत दूर कहीं, ऊँचे पहाड़ों, जंगलों, समुद्रों के पार है और बौने घोड़े पर सवार होकर ही वहाँ पहुँचा जा सकता है।

उधर लोगों के मन का कौतूहल भी शान्त नहीं हो रहा था। वे सोचते थे - हर थाल किसी न किसी चीज पर टिका होता है। आखिर थाल यों अपने आप ही हवा में तो नहीं लटका हो सकता। यह तो हँसी की बात लगती है। सो पृथ्वी भी किसी चीज पर टिकी हुई है। लेकिन कैसी है उसकी टेक? यह किसी तरह पता ही न चलता था।

ऊपर से भूचाल भी आते थे। तब पृथ्वी डोलने लगती थी, पहाड़ चटखते और ढह जाते थे, समुद्र से भीमकाय लहरें उठती थीं। लोगों की दशा वैसी होती थी, जैसी रजाई पर बिलौटों की होगी, यदि तुम रजाई तले अचानक करवट बदल लो।

सो, लोगों ने सोचा कि पृथ्वी किन्हीं शक्तिशाली जीवों की पीठ पर टिकी हुई है। जब तक ये जीव सोते रहते हैं तब तक सब ठीक रहता है, लेकिन जैसे ही वे जागकर हिलने-डुलने लगते है।, वैसे ही भूचाल आने लगता है।

अब लोगों ने तय किया कि पृथ्वी तीन विराट ह्वेलो पर टिकी हुई है। ह्वेल से बड़ा जीव तो संसार में और कोई है ही नहीं।

लेकिन यदि पृथ्वी ह्वेलों पर टिकी हुई है, तो ह्वेल किस पर टिके हुए हैं?

ह्वेलें समुद्र में तैरती हैं, लोग अपने ही सवाल का जवाब देते थे। ह्वेलें तो सदा तैरती ही रहती हैं न।

तो फिर समुद्र कहाँ फैला हुआ है?

पृथ्वी पर।

और पृथ्वी ह्वेलों पर?
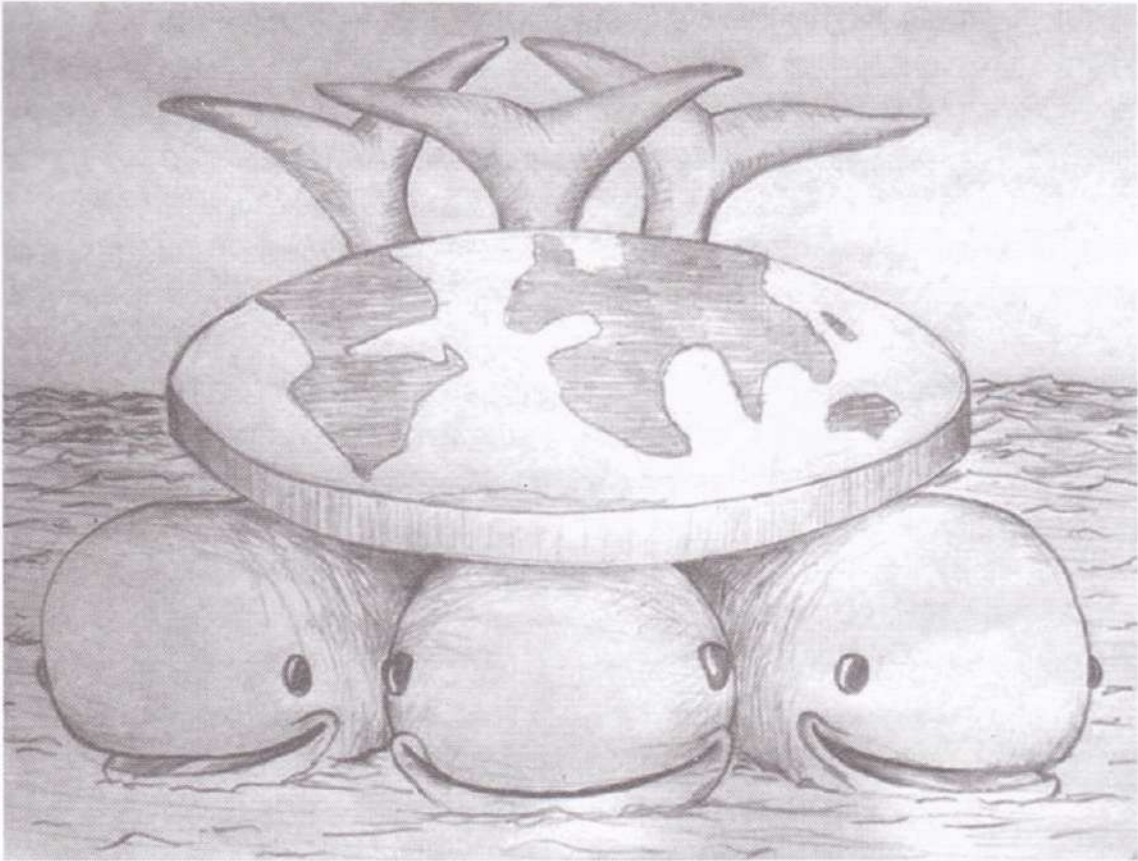
कुछ बात बनती नहीं थी।

सो लोग कहने लगे : "पृथ्वी तीन ह्वेलों पर टिकी हुई है। बस, बात ख़त्म। अगर तुम्हें इतने पर सन्तोष नहीं होता तो जाओ खुद जाकर देख लो।"

अब तो ये कहानियाँ हमें हास्यास्पद लगती हैं, लेकिन तब लोग इन बातों में विश्वास करते थे। किसी को कुछ पता जो नहीं था। और किसी से वे पूछ भी नहीं सकते थे।

प्राचीन युग में लोग पृथ्वी पर बहुत दूर तक तो जा नहीं सकते थे। तब न सड़कें थीं, न मोटरगाड़ियाँ, न जहाज, रेलगाड़ियों और हवाई जहाजों की तो बात ही छोड़ो। इसलिए ह्वेलां की बात परखने के लिए "पृथ्वी के छोर" तक कोई नहीं पहुँच पाता था।

फिर भी धीरे-धीरे लोग यात्राएँ करने ही लगे। ऊँटों पर बैठकर वे दूर ही दूर जाने लगे, बड़ी-बड़ी नावों में नदियों और समुद्रों में जाने लगे।

अब रास्ते से भटक न जायें इसके लिए लोग अपने पाँवों तले नहीं, आसमान को देखने लगे। समुद्र में जहाँ चारों ओर पानी के अलावा और कुछ नहीं होता, रास्ता और कैसे ढूँढ़ा जा सकता है? या फिर रेगिस्तान में? वहाँ भी चारों ओर बस रेत ही रेत होती है। सूर्य, चन्द्रमा और तारे तो सभी जगह नज़र आते हैं – समुद्र में भी और रेगिस्तान में भी। उन्हें जंगल में भी देखा जा सकता है और पहाड़ों के बीच गहरे खड्डों के तले से भी। और वे सदा अपने स्थान पर ही होते हैं।

सूर्य, चन्द्रमा और तारे आकाश पर सदा एक ही तरह से चलते हैं। ऐसा तो कभी नहीं होता कि सूर्य उलटी दिशा में, पश्चिम से पूर्व को चलने लगे; या फिर चन्द्रमा उगे और आसमान पर एक ही जगह खड़ा हो जाये; या तारे अपनी जगह से हटकर कहीं और चले जायें। दिन प्रतिदिन, वर्ष प्रति वर्ष सूर्य, चन्द्रमा और तारे आकाश पर एक ही गति से चलते रहते हैं, जैसे कि घड़ी की सुइयाँ।

पृथ्वी पर चाहे कुछ भी हो – बारिश आये, आँधी आये, तूफान आये – सूर्य, चन्द्रमा और तारे आकाश पर एक समान गति से चलते रहते हैं।

तब लोगों ने सोचा कि हो न हो आकाश के पीछे कोई बहुत जटिल यंत्र छिपा हुआ है। शायद, यह यंत्र घड़ी जैसा है। वहाँ पहाड़ जितने बड़े दाँतेदार चक्के घूमते होंगे और वे पृथ्वी के ऊपर तारों भरे इस आकाश को घुमाते होंगे। आकाश भी तो बहुत भारी होगा – इतना बड़ा जो है!

कितना अच्छा हो अगर पृथ्वी के छोर तक पहुँचकर आकाश में छेद कर लिया जाये और देखा जाये उसके पार क्या है! कितना रोचक होगा वहाँ सब कुछ!

हँसो नहीं। कभी लोगों को सचमुच आकाश के उस पार के इन विराट "चक्कों" में विश्वास था।

ख़ैर, जो भी हो, लोग इस बात के आदी हो गये कि आकाश पर सदा अटल व्यवस्था रहती है, कि खगोलीय पिण्डों का भरोसा किया जा सकता है, वे कभी दगा नहीं देंगे। इससे लोगों को दूर-दूर की यात्राएँ करने में मदद मिलती थी।

उदाहरण के लिए रोजाना डूबते सूरज की दिशा में बढ़ते हुए पथिक जानते थे कि वे एक ही दिशा में जा रहे हैं और बेशक, कभी भटकते नहीं थे।

यह मत भूलो कि तब न कुतुबनुमा (कम्पास) था, न मानचित्र, न प्रकाश-स्तम्भ।

तो इस तरह तारों को देख-देखकर यात्रा करते हुए लोगों का ध्यान एक विचित्र बात की ओर गया।

ऐसा होता कि लोग अपने गाँव से ऊँटों पर सवार होकर लम्बी यात्रा पर निकले और उन्होंने किसी चमकते तारे को अपना पथ-प्रदर्शक मान लिया।

अब वे चलते जाते हैं, चलते जाते हैं – एक दिन, दो दिन, हफ्ता भर और देखते क्या हैं कि हर अगली रात को वह तारा क्षितिज से अधिक ऊपर दिखायी देता है। जैसे कि पथिक सपाट मैदान पर नहीं चल रहे बल्कि विशाल ढलवाँ टीले पर चढ़ रहे हैं और उन्हें टीले के पार अधिक ही अधिक दूर का दृश्य दिखायी दे रहा है। जब वे घर लौटते हैं तो तारा हर रात को पहले से नीचे नज़र आता है, मानो वे उससे दूर टीले के पीछे जा रहे हैं।

सो, लोगों ने सोचा – इस सबका मतलब है कि पृथ्वी उभारदार है, औंधे रखे किसी विशाल कड़ाहे की भाँति।

मजे की बात तो यह है कि समुद्र में जल भी उभारदार निकला। नौयात्रियों ने ही नहीं, बल्कि सागर तट पर रहने वाले लोगों ने भी यह बात देखी। वे समुद्र में जाते जहाज को देखते, पहले तो सारा का सारा जहाज नज़र आता, फिर उसके केवल पाल ही और फिर मस्तूलों के ऊपरी सिरे ही और अंततः पूरा जहाज ओझल हो जाता। जैसे कि उसने कोई पहाड़ पार किया हो और उस पार की ढलान पर उतर गया हो।

तुम स्वयं भी समुद्र या झील के तट पर यह

बात देख सकते हो। हाँ, पानी में ऊँची लहरें नहीं उठ रही होनी चाहिए और पानी के पास झुककर जहाज को देखना चाहिए।

जहाज जब पाँचेक किलोमीटर दूर चला जायेगा तो उसका निचला हिस्स पानी के पीछे छिपने लगेगा। दसियोयं किलोमीटर दूर निकल जाने पर ही जहाज पूरी तरह ओझल होगा। इसलिए दूरबीन से देखने पर ही तुम्हें यह सब अच्छी तरह नज़र आयेगा।

प्राचीन युग में लोगों के लिए इस विचार का आदी होना बहुत कठिन था कि समुद्र उभारदार है। वे तो सदा से यही देखते आये कि पानी जब भी बिखरता है तो एक समान, सपाट फैलता है।

लेकिन इस बात पर उन्हें विश्वास करना ही पड़ा। सो अब लोग यह मानने लगे कि पृथ्वी सपाट थाल नहीं, बल्कि गोलार्ध है, जिस पर पता नहीं कैसे समुद्र ''पोत'' दिये गये हैं।

परन्तु गोलार्ध के भी सिरे होने चाहिए। लोगों ने समुद्रों की यात्राएँ कीं, दूर-दूर के देशों को गये, लेकिन ''पृथ्वी के छोर'' की कोई कहीं दूर से भी झलक तक न पा सका।

एक और बात थी जिस पर लोगों को बहुत दिमाग़ लड़ाना पड़ रहा था। सूर्य, चन्द्रमा और तारे तो रोजाना कहीं डूब जाते हैं, पृथ्वी के छोर के पीछे डुबकी लगाते हैं और अगले दिन दूसरी ओर से निकल आते हैं। तो भी ऐसा कभी नहीं हुआ कि वे उन स्तम्भों में फँस गये हों, जिन पर पृथ्वी टिकी हुई है। तारे भी सदा सभी अपने स्थान पर होते हैं। सूर्य और चन्द्रमा को भी कभी पूरब में उगने में देरी नहीं होती।

लगता है कि पृथ्वी के तले, जहाँ से खगोलीय पिण्ड गुजरते हैं, कुछ नहीं है।

अब लोगों ने सोचा : यह भी तो हो सकता है कि कोई स्तम्भ-वस्तम्भ हो ही न? और पृथ्वी गोलार्ध नहीं गोला है? यह गोला किसी पर भी टिका नहीं हुआ है, बल्कि किसी जादुई बल से लटका हुआ है?

अगर ऐसा मान लिया जाये, तो सभी पहेलियाँ आसानी से बूझी जा सकती हैं - पृथ्वी का छोर क्यों नहीं है और सूर्य क्यों कहीं फँसे बिना रात को पृथ्वी के नीचे से गुजर जाता है।

बस एक ही बात समझ में नहीं आती थी - पृथ्वी के दूसरी ओर लोग कैसे चलते हैं? वहाँ तो उनका सिर नीचे और पैर ऊपर होते होंगे!

सैकड़ों साल बीतने पर भी लोग ऐसे बड़े-बड़े जहाज बनाना सीख पाये, जिन पर महासागर पार किये जा सकते थे। अब लोगों ने सारी पृथ्वी का चक्कर लगाया तो उन्हें पूरी तरह यकीन हो गया कि पृथ्वी एक गोला है। और वे यह भी समझ गये कि पृथ्वी पर कोई भी सिर नीचे पाँव ऊपर करके नहीं चलता है। क्योंकि पृथ्वी ही सदा नीचे होती है।

अब तो हम सब बचपन से ही जानते हैं कि पृथ्वी एक गोला है। हर स्कूल में अब ग्लोब है। लेकिन जरा सोचो कि पहले लोगों के लिए इस निष्कर्ष पर पहुँचना कितना कठिन था!

('आओ दूरबीन देखें' पुस्तक से)

कविता
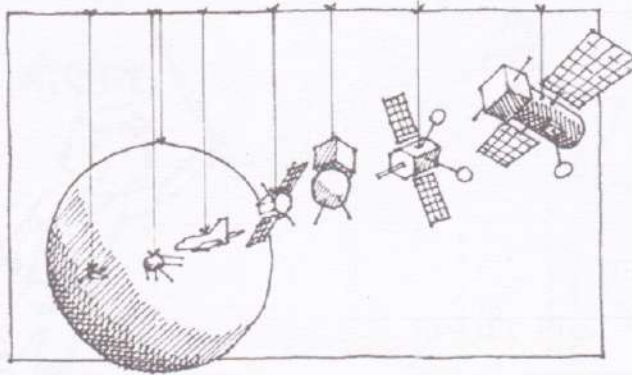
बिल्ली के बच्चों को मत मारो बेटा

– कात्यायनी

मत मारो बेटा इनको।
ये भी अपनी माँ के उतने ही प्यारे हैं
आँखों के तारे हैं, राजदुलारे हैं।
वह इनको चाट-चाट रोज़ साफ़ करती है
और धूप में लेटी अलसायी
इनको वह दूध फिर पिलाती है।
जैसे हर माँ करती, वैसे ही वह इनको
इस मुश्किल दुनिया में जीना सिखलाती है
बस्ती के बिल्ले से इनको बचाती है
और इन्हें खुद उससे बचना सिखलाती है
लड़ना सिखलाती है।

वह इनको चूहों को मारना सिखलाती है
खुद अपने बूते पर जीना सिखलाती है।

मत मारो इनको।
ये सुन्दर हैं, भोले हैं। बच्चे हैं ये भी! प्यार करो।
खेलो इनसे। ये भी खेलेंगे।

कहानी

चलता-फिरता हैट

- निकोलाई नोसोव

चिक्कू एक बिलौटा था। वह अल्मारी के सामने फर्श पर बैठकर एक मक्खी को पकड़ने की कोशिश कर रहा था। अल्मारी के बिल्कुल किनारे पर एक हैट रखा हुआ था। चिक्कू ने मक्खी को उस पर बैठे हुए देखा। वह कूदा और अपने पंजे से हैट को जकड़ लिया। लेकिन हैट अल्मारी से सरक गया। चिक्कू की पकड़ ढीली हो गई और वह धड़ाम से नीचे गिर पड़ा। फिर हैट उड़ते हुए उसके ऊपर आ गिरा। अब चिक्कू कहाँ था?

शेखर और मयंक अपनी कलरिंग बुक में व्यस्त थे। वे हैट को चिक्कू पर गिरते हुए देख नहीं पाये थे, हालाँकि उन्होंने कुछ अजीबोगरीब आवाज ज़रूर सुनी थी।

शेखर यह देखने के लिए मुड़ा कि क्या हुआ। फर्श पर हैट पड़ा हुआ था। वह उसे उठाने के लिए गया। लेकिन जैसे ही वह नीचे झुका, चिल्ला उठा–

"अरे कोई बचाओ!"

"क्या हुआ?" मयंक ने पूछा।

"यह जीवित है!"

"कौन?"

"ह-ह-हैट!"

"क्या बेवकूफी है?"

"ल-ल-लेकिन यह है!"

मयंक उसे देखने के लिए उठा।

अचानक हैट उनकी ओर सरकने लगा। मयंक चीखा और दौड़कर सोफे पर चढ़ गया।

शेखर उसके दाहिनी ओर कूद गया। इसी बीच हैट रेंगते हुए कमरे के बीचोबीच रुक गया। यह सब देखकर लड़कों का दिल धड़कने लगा। हैट उनकी ओर बढ़ रहा था।

"ओह!"

"बचाओ!"

वे नीचे कूदे और तेजी से कमरे के बाहर भागे। जैसे ही वे रसोईघर में पहुँचे उन्होंने अपने पीछे दरवाजे को धड़ाम से बन्द कर लिया।

"ये हैट का क्या माजरा है? क्यों यह चारों ओर चहलकदमी कर रहा है?" शेखर ने आश्चर्य से कहा।

"सम्भवत: कोई उसे डोरी से खींच रहा हो।" मयंक ने कहा।

"जाओ जाकर देखो।" शेखर ने कहा।

"चलो साथ चलते हैं। मैं एक कुरेदनी ले लेता हूँ। अगर वह फिर हमारी ओर बढ़ेगा तो मैं उसे जोर से मारूँगा।"

"रुको! मैं भी एक कुरेदनी लेता हूँ!"

"हमारे पास केवल एक ही है!"

"फिर मैं एक बड़ी छड़ी ले लेता हूँ!"

उन्होंने खुद को कुरेदनी और छड़ी से लैस किया, धीरे से दरवाजा खोला और बाहर देखा।

"कहाँ है वह?"

"वहाँ पर कोने में।"

हैट वहीं फर्श पर पड़ा हुआ था।

"देखा? यह अब हमसे डरने लगा।"

"देखो मैं इसे भगाता हूँ," शेखर ने कहा।

उसने अपनी कुरेदनी से मेज के पाये के सामने पीटना शुरू कर दिया।

"तुझे मैं देख लूँगा!"

लेकिन हैट टस से मस नहीं हुआ।

"चलो आलू से मारें!" मयंक ने कहा।

वे रसोईघर से आलू लाये और हैट पर फेंकना शुरू कर दिये। अन्तत: मयंक ने मारा। हैट हवा में उछला और कराहा : मियाऊँ!

किनारे से धूसर पूँछ का एक हिस्सा बाहर निकला हुआ था।

"चिक्कू!" लड़के चिल्ला उठे।

मयंक ने बिलौटे को पकड़कर गले से लगा लिया।

"बेचारे चिक्कू! तुम हैट के नीचे कैसे आ गये थे?"

लेकिन चिक्कू कुछ नहीं बोला, वह केवल घुरघुराया और अपनी चमकीली आँखें झपकाने लगा।

अनुवादः मीनाक्षी

कहानी

सरल साइमन काम पर गया...

धूर्त और चालाक लोगों की कहानियाँ मशहूर होती हैं और उतनी ही मशहूर होती हैं नौजवानों और गोबरगणेशों की कहानियाँ। ये भी एक ऐसी ही कहानी है। ये कहानी है इंग्लैण्ड के एक लड़के की जिसका नाम साइमन था। जीने के उसके अन्दाज सीधे-सरल होने की वजह से लोग उसे सरल साइमन बुलाते थे।

साइमन अपनी माँ के साथ इंग्लैण्ड के एक पिछड़े इलाके में रहता था। उसके पिता की मृत्यु हो गई थी इस वजह से उसकी माँ को उसके और खुद के खाने-पहनने के इन्तजाम में कड़ी मेहनत करनी पड़ती थी।

जब साइमन बड़ा हो गया और काम करने लायक हो गया तब उसकी माँ ने उसे एक भले बुजुर्ग व्यक्ति के यहाँ काम पर लगा दिया।

साइमन के अच्छे काम से खुश होकर उस भले बुजुर्ग व्यक्ति ने उसे पुरस्कार में एक बड़ा-सा सोने का टुकड़ा दिया। साइमन उस बड़े सोने के टुकड़े को उठाकर घर की ओर चला। लेकिन गर्मी बहुत ज्यादा थी और वो थका हुआ था।

चलते-चलते उसकी मुलाकात एक घुड़सवार से हुई। साइमन ने सोचा कि वो घोड़े पर सवार होकर घर जल्दी पहुँच सकता है। इसलिए उसने उस घुड़सवार को सोना देकर घोड़ा ले लिया। जब वो घोड़े पर सवारी करते-करते थक गया तो घोड़े से नीचे उतर आया। तन घोड़े ने उसे दुलत्ती मारी और भागने लगा। सही समय पर उसने घोड़े को पकड़ लिया। वह उसे खींचता हुआ आगे चला। आगे रास्ते में उसकी मुलाकात एक किसान से हुई। किसान के पास गाय थी। साइमन ने सोचा कि क्यों न घोड़े को गाय से बदल ले, गाय दूध देती है और दुलत्ती भी नहीं मारती। और उसने घोड़े के बदले गाय ले ली।

लेकिन जब साइमन ने गाय से दूध दुहने की कोशिश की, तब गाय ने दूध नहीं दिया। तभी उधर से एक आदमी अपने सुअर के साथ बाजार की ओर जा रहा था। उसने साइमन को सुअर के बदले गाय लेने के लिए मनाया और वो बड़ी आसानी से मान गया।

साइमन सुअर को अपने घर की ओर ले जाने को खींच रहा था लेकिन सूअर उल्टी दिशा में जाने के लिए अड़ गया था। उसी समय उधर से एक आदमी अपनी बत्तख के साथ जा रहा था। साइमन ने सुअर के बदले

बत्तख लेने का इरादा किया और बत्तख लेकर घर की ओर बढ़ने लगा।

जब वो घर पहुँचने ही वाला था, संयोग से उसे एक आदमी मिल गया जिसके पास चक्की का पत्थर था। उसने साइमन से कहा ''बत्तख तो मामूली पक्षी है, लेकिन हर किसी के पास चक्की नहीं होती''। इसलिए साइमन ने बत्तख के बदले चक्की का पत्थर ले लिया। लेकिन उसे यह सोने के टुकड़े से ज्यादा भारी लगा। इसलिए उसने चक्की को अपने घर के बाहर के कुँए में फेंक दिया और हल्के शरीर और हल्के मन से खाली हाथ अपनी बूढ़ी माँ के पास चला गया।

अनुवाद : लता

कहानी
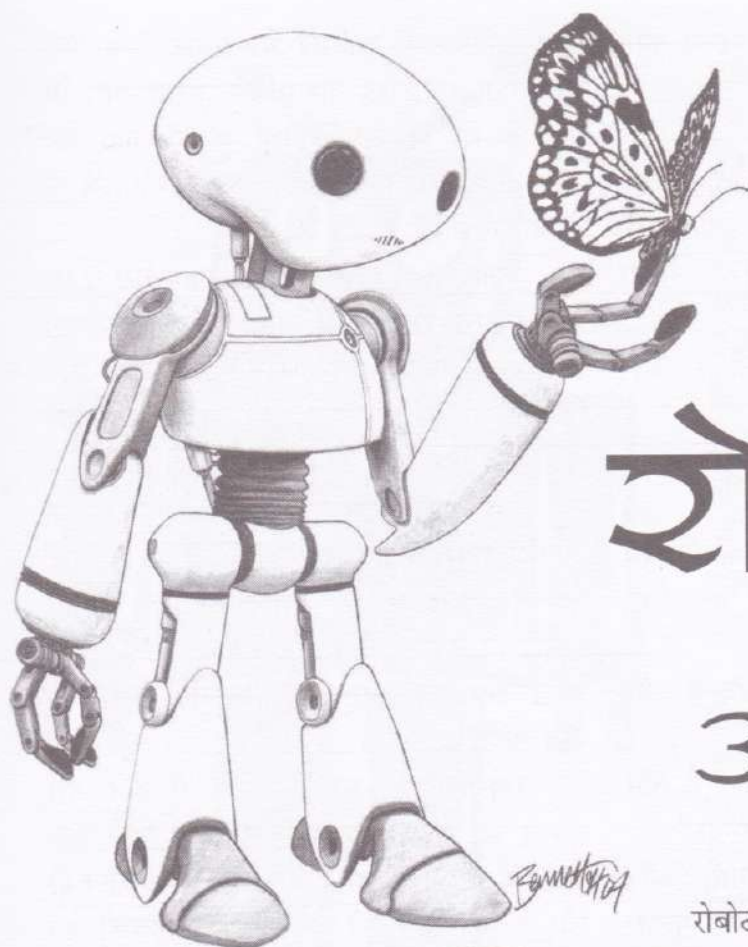
रोबोट और तितली

• विताउते जिलिन्सकाइते

रोबोट प्रदर्शनी हाल के बिल्कुल कोने में खड़ा था, लेकिन भीड़ उसे हमेशा घेरे रहती थी। यूं तो वहाँ वैज्ञानिक चमत्कार की बहुत-सी चीजें थीं। पर रोबोट का एक प्रमुख आकर्षण था। सभी तरह के छोटे-बड़े दर्शक कई-कई बार उसे देखने आते। और उसके हिलते हुए भारी लौह हाथों, बड़े-से चौकोर सिर और उसकी आँख की मद्धिम नारंगी रोशनी को एकटक निहारते रहते थे।

रोबोट अपने विशाल हाथों और सिर को घुमाने के अलावा पूछे गये प्रश्नों के उत्तर भी दे सकता था। लेकिन सभी तरह के प्रश्नों के उत्तर दे पाना उसके लिए सम्भव न था। वह केवल उन्हीं प्रश्नों के उत्तर देता था, जो प्रश्न-तालिका में एक निश्चित क्रम में लिखे हुए थे। वह प्रश्न-तालिका पास ही दीवार पर टँगी थी। दर्शक उन प्रश्नों को पढ़ते और बारी-बारी से रोबोट से पूछते।

"तुम्हारा नाम क्या है?" यही पहला प्रश्न था।

"मेरा नाम दोनदोन है।"

"तुम्हारा जन्मस्थान?" दूसरा सवाल था।

"मेरा जन्म एक प्रयोगशाला में हुआ था।"

"अभी तुम क्या कर रहे हो?" तीसरा सवाल किया जाता।

"अभी मैं कुछ सीधे-सादे प्रश्नों के उत्तर दे रहा हूँ!"

यह कहकर रोबोट धीरे से हँसता:

"हा, हा, हा।"

दर्शक भी इस लतीफेदार उत्तर को सुनकर हँसते और जी भरकर हँस लेने के बाद फिर पूछने लगते:

"कौन-सी चीज तुम्हें बहुत पसंद है और कौन-सी चीज विशेष नापसन्द?"

"मशीन का तेल मुझे बहुत पसन्द है और जैमवाली आइसक्रीम बिल्कुल नापसन्द!"

दर्शक जोर का ठहाका लगाते और प्रश्न-तालिका को देखकर पाँचवाँ प्रश्न पूछते:

"रोबटों का भविष्य कैसा है?"

"रोबटों का भविष्य बहुत उज्ज्वल है!"

मैं उन सभी नियोजित कार्यों को पूरा करता हूँ, जो मुझे सौंपे जाते हैं।"

रोबोट के लिए अन्तिम प्रश्न था:

"हम दर्शकों के लिए तुम्हारा सन्देश क्या है?"

"मेरी ओर से आपको बेहतर स्वास्थ्य और सफल जीवन की शुभकामनाएँ।ऽ

रोबोट यह कहता हुआ अपना बायाँ पैर उठाता और फर्श पर पटक देता। लेकिन रोबोट की खुशी से प्रदर्शनी काँप उठता! और फिर आती नए जिज्ञासु दर्शकों की भीड़, पुन: उन्हीं प्रश्नों के उत्तर सुनाई देने लगते, जो क्रमवार प्रश्न-तालिका में शामिल थे। रोबोट बिना थके उत्तर देता रहा, वह जरूरत पर हँसता था, पैर पटकता था या अपने हाथों को हिलाता था। और तो और, अपनी नारंगी आँख भी मजे से झपकाता था।

"शाबश! बेहिचक अपना प्रोग्राम पूरा करता है। सचमुच रोबटों का भविष्य बहुत उज्ज्वल है।" बुजुर्ग प्रशंसा करते। बच्चे इतने खुश होते कि उसके पैरों के पास ही जमकर बैठ जाते थे और उठने का नाम तक न लेते थे।

"बच्चों, चलो, देर हो रही है!" मम्मी-पापा आवाज देते। चलो, आइसक्रीम खरीदी जाए।"

"आइसक्रीम नहीं मशीन का तेल!" बच्चे रोबोट की नकल करते और रोबोट अपनी नारंगी आँख झपकाता और हाथ हिलाकर विदा का भाव प्रदर्शित करता था।

रात होते ही प्रदर्शनी हाल में ऊब भरा सन्नटा छा जाता और दोनदोन बिना हिले-डुले कोने में खड़ा रहता। दिन भर धमा-चौकड़ी और दर्शकों द्वारा की गई अपनी वाहवाही को याद करता रहता था। उसका लौह-हृदय खुशी से फूला न समाता था। क्या यह उसकी शानदार सफलता न थी। वह नाक चढ़ाकर प्रदर्शनी की दूसरी वस्तुओं को देखता: इन मशीनों और स्वचालित यंत्रों ने तो कभी सपने में भी ऐसी प्रशंसा न सुनी होगी। वे सभी मिलकर मेरी बराबरी कर सकते हैं भला!

नया दिन आता, प्रदर्शनी हॉल का दरवाजा खुलता और हॉल में पहले की तरह भीड़ भर जाती थी। दर्शक क्रमवार वही-वही प्रश्न पूछने शुरू करते और फिर प्रशंसकों की तारीफ और कहकहे गूँजते रहते थे। इस तरह दिन-रात बीतते रहे। यह क्रम बखूबी चला करता, यदि एक रात खिड़की से उड़कर आई एक तितली
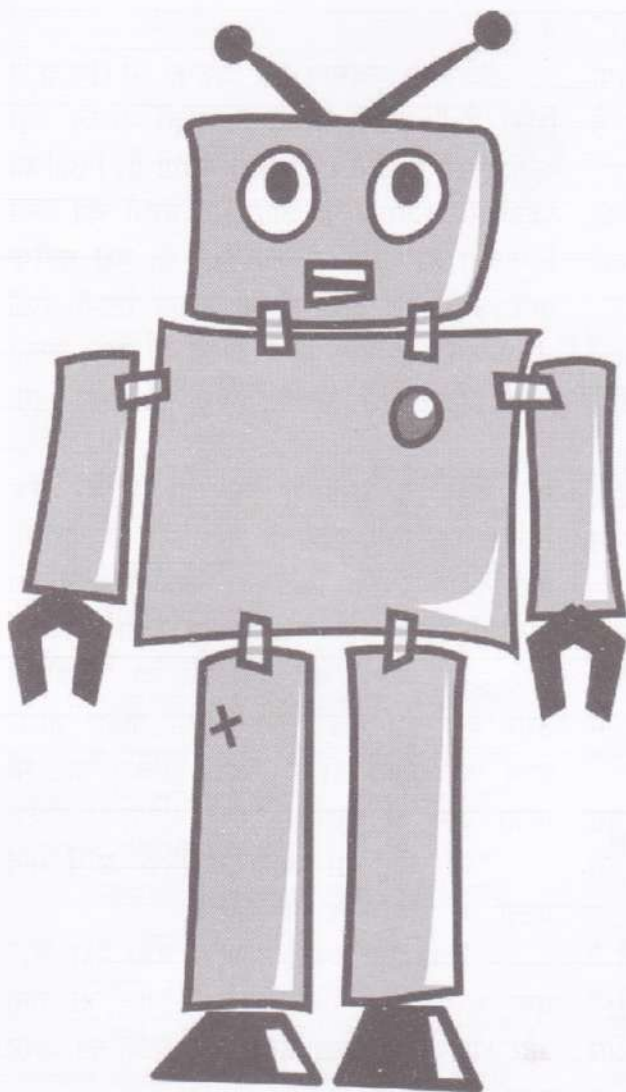
ने काम न बिगाड़ा होता!

वह दोनदोन की नारंगी आँख की ओर आकर्षित हुई जो अँधेरे में तेजी से चमक रही थी।

तितली रोबोट के कन्धे पर बैठ गई, शीशे की आँख को अपने पंख से छूकर मायूसी से बोली:

"अहा, कितना शीतल प्रकाश है!"

"यह प्रकाश नहीं, मेरी आँख है, आँख," रोबोट कहना तो यही चाहता था। लेकिन वह सिर्फ पहले नम्बर के सवाल का उत्तर दे पाया:

"मेरा नाम दोनदोन है!"

"हाँ?" तितली बड़ी खुश हुई कि इत्ता बड़ा और ऐसा ताकतवर प्राणी उस जैसी मामूली तितली से बातें कर रहा है। "और मैं एक तितली हूँ। लोग प्यार से मुझे नन्हीं तितली कहते हैं। रात में नींद नहीं आई! बस, घूमने निकल पड़ी।"

"मेरा जन्म एक प्रयोगशाला में हुआ था," रोबोट ने दूसरे नम्बर का उत्तर दिया।

"प्रयोगशाला... यह तो कोई अच्छा-सा देश होगा," नन्ही तितली ने अपने पंखों को झटकते हुए कहा। "लेकिन मेरा जन्म एक पुष्पित पांगुर में हुआ था। क्या तुमने कभी पांगुर के वृक्ष देखे हैं?"

"अभी मैं कुछ सीधे-सादे प्रश्नों के उत्तर दे रहा हूँ! हा, हा, हा!" रोबोट ने कहा।

नन्ही तितली जरा झेंप गई। उसके चमकीले पंख फीके पड़ गये।

"भाई, माफ करना!" वह धीरे से फुसफुसाई। "मैं अभी अक्ल की कच्ची हूँ। परसों ही तो मैंने आँखें खोली हैं, मेरी कोषावस्था थी न! मेरे बुजुर्गों ने मुझे अभी यही सिखाया है कि पक्षियों से बचकर रहना चाहिए और चमगादड़ों से तो खासकर..."

दोनदोन ने अपने प्रोग्राम के अनुसार अगला उत्तर दिया:

"मशीन का तेल मुझे बहुत पसंद

है और जैमवाली आइसक्रीम बिल्कुल नापसन्द!"

"और मुझे पांगुर की नरम-नरम पत्तियाँ खाना बहुत अच्छा लगता है," नन्ही तितली ने कहा।

"पर मशीन का तेल तो मैंने चखा नहीं है। क्या तुम पांगुर की पत्ती चखोगे? मैं तुम्हारे लिए ले आउँगी।..."

"हाँ, हाँ, ले आओ, खुशी से चखूँगा," दोनदोन कहना तो यही चाहता था, लेकिन पाँचवें नम्बर का उत्तर दे पाया:

"रोबटों का भविष्य बहुत उज्ज्वल है।"

यह सुनते ही नन्ही तितली का जी बैठ गया।

"तुम्हारी गोल-मोल बातें मेरे पल्ले नहीं पड़तीं," तितली ने एक ठण्डी साँस ली। "भाई, मैंने तो पहले ही कहा कि मैं अपने कोष में बन्द थी, सारी दुनिया से बेखबर थी।"

"मैं उन सभी नियोजित कार्यों को पूरा करता हूँ जो मुझे सौंपे जाते हैं," दोनदोन ने उत्तर दिया।

"भाई, माफ करना! अब मुझे जाना है," नन्ही तितली ने कहा। "अलविदा, दोनदोन प्यारे!"

"मेरी ओर से आपको बेहतर स्वास्थ्य और सफल जीवन की शुभकामनाएँ," दोनदोन ने भारी आवाज में कहा और अपना इस्पाती पैर पटक दिया।

"धन्यवाद!" तितली ने कहा और रोबोट के गालों को अपने नाजुक पंखों से थपथपा दिया। उसके बाद नन्ही तितली उड़ गयी।

एकनेत्रीय रोबोट खोया-खोया-सा उसकी ओर देर तक देखता रहा, जिधर नन्ही तितली उड़कर गई थी। वह बड़ी देर तक व्याकुल रहा, उन अजीब ख्यालों में खोया रहा, जो इससे पहले कभी उसके लौह-मस्तिष्क में आए न थे।

"उसका स्वभाव मेरे दर्शकों से बिल्कुल भिन्न है," उसने सोचा। "उसकी अक्ल जरा अजीब-सी है: विचित्र सवाल करती है, नियोजित प्रश्नों से कतराती है और मेरे उत्तरों का क्रम बिगाड़ती है। उसने तो एक बार भी मेरी तारीफ नहीं की।... पर कुछ भी हो उसके रेशमी पंखों में आकर्षण है और मीठी बोली में जादू। चलते समय उसने मुझे दोनदोन प्यारे भी कहा था।..."

वह इस मुलाकात के बारे में देर तक सोचता रहा कि सुबह हो गई। उसे तो यह भी पता न लग पाया कि कब प्रदर्शनी हाल का दरवाज़ा खुला और दर्शकों का सैलाब उसकी ओर उमड़ पड़ा। वह शुरू के दो प्रश्नों के उत्तर देना ही भूल गया। किसी प्रकार तीसरे प्रश्न का जवाब ही दे पाया, लेकिन वह भी गलत क्रम के साथ:

"हा, हा, हा! अभी मैं कुछ सीधे-सादे प्रश्नों के जवाब दे रहा हूँ!"

"यह तो हमारा मजाक उड़ा रहा है," एक अत्यन्त सम्मानित दर्शक नाराज हो गया और भागकर गुस्ताख रोबोट की शिकायत करने मुख्य अभियन्ता के पासपहुँचा।

लेकिन तब तक दोनदोन की तबियत ठीक हो चुकी थी और अब वह क्रम से सही-सही उत्तर देता जा रहा था। फिर उसे पहले की तरह जोर-शोर से सराहा जा रहा था।

"शाबाश, मेरे शेर! सारे उत्तर तो ठीक-ठीक मिल रहे हैं। उससे बड़ी उम्मीदें हैं।"

"अफसोस!" रोबोट उदास हो गया। "काश! नन्ही तितली भी यह सब सुन पाती। इत्ती तारीफ पर तो निहाल हो उठती वह। और तब मेरी खूब प्रशंसा करती।... काश! वह इस रात
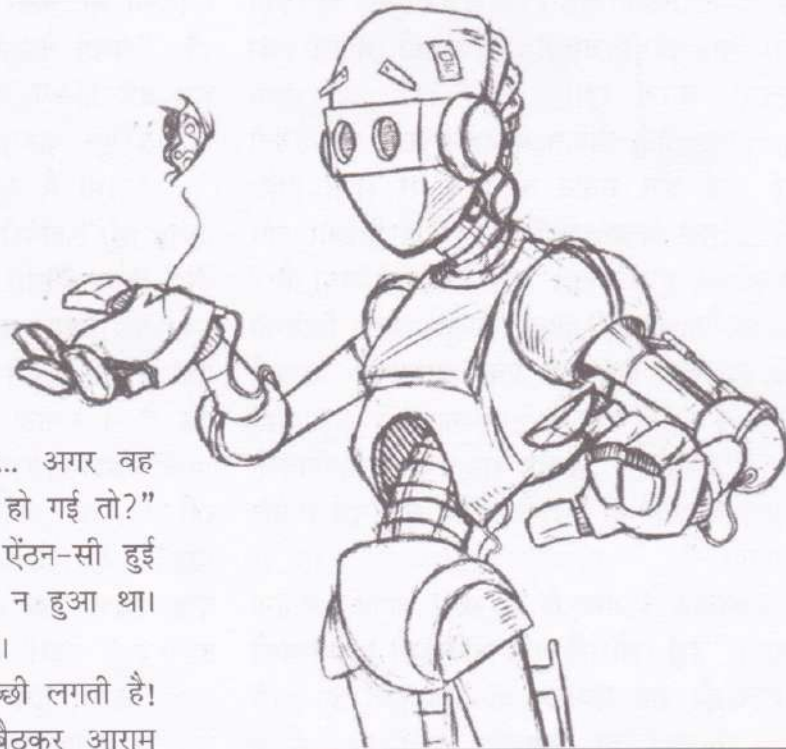
फिर आ जाती! और अगर... अगर वह किसी चमगादड़ का शिकार हो गई तो?" उसके बेचैन हृदय में एक ऐंठन-सी हुई - पर ऐसा तो पहले कभी न हुआ था। अचानक तितली आ पहुँची।

"मुझे रात की सैर अच्छी लगती है! अब मैं तुम्हारे कन्धे पर बैठकर आराम करूँगी। अहा, यहाँ कितना सुख-चैन है!" तितली फुसफुसाई।

रोबोट के लौह-वक्ष पर सुकोमल स्पर्श की एक सिहरन-सी दौड़ गई।

"मेरा नाम दोनदोन है।"

"भाई, मुझे तुम्हारा नाम याद है," तितली ने शिष्टता से कहा। "लेकिन तुम्हारे भाई-बहन तो हैं न?"

दोनदोन कहना चाहता था कि वह इस दुनिया में अकेले है, इस प्रदर्शनी हाल और शहर तक में उसका कोई नहीं है! लेकिन वह दो नम्बर के उत्तर पर ठहर गया:

"मेरा जन्म प्रयोगशाला में हुआ था।"

"यह तो तुमने बताया ही था," तितली ने याद दिलाते हुए कहा। "भाई, तुम बार-बार एक ही रट लगाते हो। क्या तुम थकते नहीं? अच्छा मैं चली! मुझे बहुत जोर से भूख लगी है। सुबह से कुछ खाया-पीया नहीं। नमस्ते, प्यारे दोनदोन! फिर मिलेंगे।"

यह कहकर उसने अपने नाजुक पंखों से रोबोट के गाल थपथपाये और खिड़की से बाहर उड़ गयी। दोनदोन उसे देर तक देखता रहा, उसकी नारंगी आँख ऐसी अनोखी चमक के साथ पहले कभी न चमकी थीं।

"वह शीघ्र ही आएगी," उसका लौह हृदय खुशी से झूम उठा। "उसे मेरी दोस्ती पसन्द है। वह लौटकर प्यार से मेरे कन्धे पर बैठ जायेगी। काश, यह रात कभी खत्म न होती! तब मैं शायद नये-नये शब्द बोलना सीख जाता, अपने प्रोग्राम के अलावा कुछ और कह पाता! तितली को धन्यवाद देता और कहता कि तेरे सिवा मेरा और कोई नहीं है।..."

दोनदोन की नारंगी आँख खिड़की पर टिकी रही। वह बड़ी बेसब्री से उसकी वापसी का इन्तज़ार करता रहा।

वह लौटी लेकिन बदहवास-सी! वह दौड़ती हुई आई और रोबोट के सीने पर झपट पड़ी।

"मुझे बचा लो!" नन्ही तितली जोर-जोर से हाँफते हुए बोली। "वो मेरे पीछे पड़ा है।"

और सचमुच एक काली छाया खिड़की पर चमकी। झपटकर एक चमगादड़ प्रदर्शनी हाल में घुस आया।

"मुझे उस राक्षस से बचाओ!" तितली रोबोट के सीने से चिपक गई। "वह मुझे निगल जाएगा!"

रोबोट ने बहादुरी से सीना तानकर कहना चाहा: "डरो नहीं! मैं यहाँ की सबसे शक्तिशाली मशीन हूँ। क्या मजाल, जो कोई तुम्हें छू ले?"

लेकिन उत्तर बिल्कुल भिन्न था:

"मेरा नाम दोनदोन है।"

चमगादड़ ने रोबोट का चक्कर लगाया और उसकी छाती से चिपकी हुई तितली को देख लिया।

"प्यारे दोनदोन, मुझे बचा लो!" तितली गिड़गिड़ाई।

"चल भाग यहाँ से!" रोबोट चमगादड़ को डाँटना चाहता था, लेकिन फिर वही नियोजित उत्तर सुनाई पड़ा:

"मेरा जन्म प्रयोगशाला में हुआ था।"

चमगादड़ तितली पर झपटा, और उसने अपने पैने दाँत उसे गड़ा दिए। पर उसे निगल न पाया। नन्ही तितली रोबोट के पैरों पर गिर पड़ी।

"हाय मेरा पंख..." तितली का विलाप सुनाई दिया। कई बार रोबोट का चक्कर लगाने और तितली को न पकड़ पाने के कारण चमगादड़ खिड़की से बाहर उड़ गया।

"उसने मेरा पंख नोच लिया है। पर तुमने मुझे बचाया क्यों नहीं? आह, दोनदोन!" तितली ने रोते हुए कहा।

"अभी मैं कुछ सीधे-सादे प्रश्नों के उत्तर दे रहा हूँ!" दोनदोन ने झट से उत्तर दिया और हँसने लगा: "हा, हा, हा!"

यह उत्तर सुनते ही रोबोट की पीठ पर एक थरथराहट-सी हुई। पर दूसरा कोई उत्तर तो वह दे न सकता था।

असहाय तितली फर्श पर पड़ी तड़फड़ा रही थी, वह अपने पांगुर के वृक्ष तक उड़ना चाहती थी, लेकिन... लेकिन एक लट्टू की तरह सिर्फ एक ही जगह पर पड़ी नाचती, तड़फड़ाती रही।

"काश, तुम दर्द को जान पाते!" तितली धीरे से कराह उठी।

"मशीन का तेल मुझे बहुत पसन्द है और जैमवाली आइसक्रीम बिल्कुल नापसन्द।" रोबोट ने जवाब दिया।

"क्या कहा?" तितली को अपने कान पर विश्वास न हुआ। "तुम्हें मेरे लिए जरा भी अफसोस नहीं है?"

"रोबटों का भविष्य बहुत उज्ज्वल है।" उसे उत्तर मिला।

"हाय, तुम कितने हृदयहीन और निर्दयी हो!" मरणासन्न तितली ने क्षीण स्वर में कहा।

"मैं उस सभी नियोजित कार्यों को पूरा करता हूँ, जो मुझे सौंपे जाते हैं।"

लेकिन तितली दम तोड़ रही थी। उसने अन्तिम बार अपने बचे हुए पंख को ऊपर उठाया और धीरे से नीचे झुका लिया, ताकि उसे फिर कभी न उठाना पड़े।

"अलविदा, दोनदोन प्यारे..." उसने

कँपकँपाती आवाज में कहा और मर गयी।

"मेरी ओर से आपको बेहतर स्वास्थ्य और सफल जीवन की शुभकामनाएँ।" और रोबोट ने पहले की तरह झनझनाते हुए अपना पैर फर्श पर दे मारा।

प्रदर्शनी हाल में गहरा सन्नाटा छा गया। तितली रोबोट के पैर तले निर्जीव पड़ी थी। सुबह हो चुकी थी प्रदर्शनी हाल खुला। जिज्ञासु दर्शकों की भीड़ अन्दर घुस आई और रोबोट को घेरकर खड़ी हो गई।

"तुम्हारा नाम क्या है?" पहला प्रश्न किया गया।

"उसने मुझे दोनदोन प्यारे कहा।... " रोबोट तो तितली की याद में खोया था। उसके लौह हृदय में एक टीस-सी उठी। "मुझे अब फिर कोई 'दोनदोन प्यारे' न कहेगा।"

"तुम्हारा जन्म स्थान?" दूसरा प्रश्न किया गया।

"वह पांगुर के वृक्ष पर जन्मी थी... लेकिन मैंने तो न पांगुर के वृक्ष देखे है, न उनके फूल ही।... " रोबोट की आँख डबडबा आई।

उसने तीसरे और यहाँ तक कि सभी प्रश्नों के उत्तर नहीं दिये। उस दिन न उसने हाथ उठाये न पैर पटके और न नारंगी आँख ही झपकी।

रोबोट के मुख्य अभियन्ता को बुलाया गया। उसने दोनदोन का सीना ठकठकाया, हरेक पेंच ठीक से कसा और सख्त आवाज में बोला:

"हाँ, तो बताओ, रोबटों का भविष्य कैसा है?"

"पां-गु-र..." रोबोट बड़ी मुश्किल से बस इतना ही कह पाया कि उसके सीने में तेज कड़कड़ाहट हुई और कुछ टूट-सा गया।

मुख्य अभियन्ती का चेहरा उतर गया। उसने कहा:

"खेद है कि हमारा रोबोट खराब हो गया।... हमेशा ठीक-ठाक रहता था, उसके काम में कभी कोई गड़बड़ी न थी। फिलहाल उसकी मरम्मत की जायेगी। अगर ठीक न हुआ तो उसे कूड़े में डालना होगा।"

रोबोट को एक बड़े-से सफेद खोल से ढँक दिया गया और ऊपर एक तख्ती लटका दी गई: "मरम्मत के लिए।"

सफेद आवरण के भीतर मौत का सन्नाटा छाया रहता था। लेकिन रात में जब पुष्पित पांगुर की खुशबू और पत्तियों की सरसराहटें खुली खिड़की से आते हवा के झोंकों के साथ प्रवेश करतीं तो लगता कि सफेद आवरण के भीतर से बहुत धीरे-धीरे टूटे-बिखरे स्वर सुनाई पड़ रहे है। शायद कोई बोलना सीख रहा है:

"नन्ही...ति...त-ली...पां...गु-र... द...र्द..."
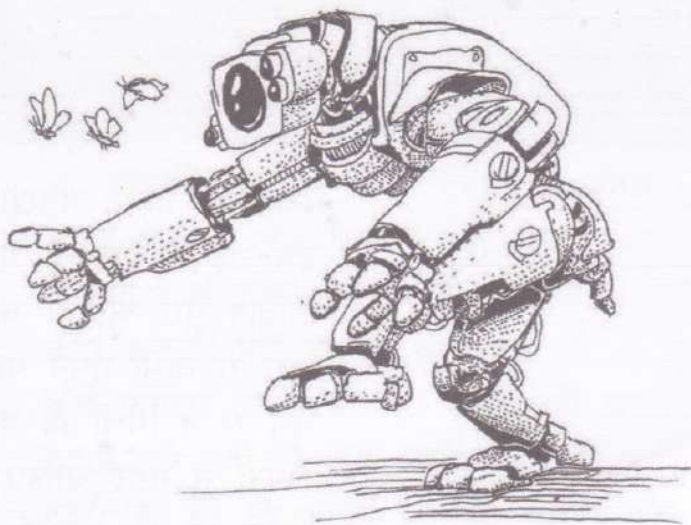
अल्लामा इकबाल की कविता

इक दिन किसी मक्खी से ये कहने लगा मकड़ा
इस राह से होता है गुज़र रोज़ तुम्हारा
लेकिन मेरी कुटिया की न जगी कभी किस्मत
भूले से कभी तुमने यहाँ पाँव न रखा
गैरों से न मिली तो कोई बात नहीं है
अपनों से मगर चाहिए यूँ खिंच के न रहना
आओ जो मेरे घर में, तो इज़्ज़त है ये मेरी
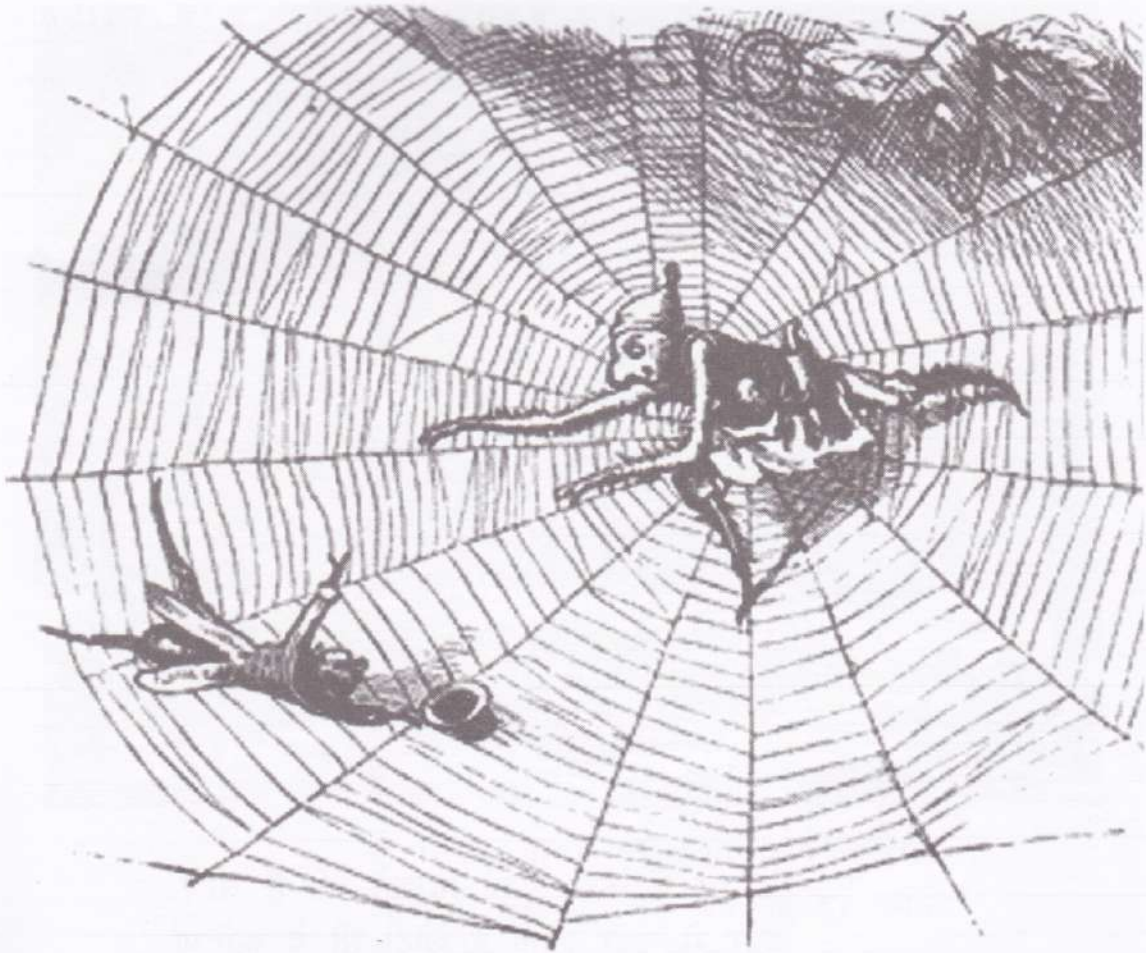
वो सामने सीढ़ी है, जो मंज़ूर हो आना
मक्खी ने सुनी बात मकड़े की तो बोली
हज़रत किसी नादां को दीजिएगा ये धोखा
इस जाल में मक्खी कभी आने की नहीं है
जो आपकी सीढ़ी पे चढ़ा, फिर नहीं उतरा
मकड़े ने कहा वाह! फरेबी मुझे समझे
तुम-सा कोई नादान ज़माने में न होगा
मंज़ूर तुम्हारी मुझे ख़ातिर थी वरना
कुछ फ़ायदा अपना तो मेरा इसमें नहीं था
उड़ती हुई आई हो खुदा जाने कहाँ से
ठहरो जो मेरे घर में तो है इसमें बुरा क्या?

शब्दार्थ:
नादां = नासमझ

इस घर में कई तुमको दिखाने की हैं चीज़ें,
बाहर से नज़र आती है छोटी-सी ये कुटिया
लटके हुए दरवाज़ों पे बारीक हैं परदे
दीवारों को आईनों से है मैंने सजाया
मेहमानों के आराम को हाज़िर हैं बिछौने
हर शख़्स को सामाँ यह मयस्सर नहीं होता
मक्खी ने कहा, ख़ैर यह सब ठीक है लेकिन
मैं आपके घर आऊँ, यह उम्मीद न रखना
इन नर्म बिछौनों से ख़ुदा मुझको बचाये
सो जाये कोई इनपे तो फिर उठ नहीं सकता
मकड़े ने कहा दिल में, सुनी बात जो उसकी
फाँसूं इसे किस तरह, यह कमबख़्त है दाना
सौ काम ख़ुशामद से निकलते हैं जहाँ में

शब्दार्थ:
सामाँ = सामान,
दाना = समझदार

देखो जिसे दुनिया में, ख़ुशामद का है बन्दा
यह सोच के मक्खी से कहा उसने, बड़ी बी!
अल्लाह ने बख़्शा है बड़ा आपको रुतबा
होती है उसे आपकी सूरत से मुहब्बत
हो जिसने कभी एक नज़र आपको देखा
आँखें हैं कि हीरे की चमकती हुई कनियाँ
सर आपका अल्लाह ने कलगी से सजाया
ये हुस्न, ये पोशाक, ये खूबी, ये सफाई
फिर इस पे कयामत है ये उड़ते हुए गाना

मक्खी ने सुनी जब ये ख़ुशामद, तो पसीजी
बोली कि नहीं आपसे मुझको कोई खटका
इनकार की आदत को समझती हूँ बुरा मैं
सच यह है कि दिल तोड़ना अच्छा नहीं होता
यह बात कही और उड़ी अपनी जगह से
पास आई तो मकड़े ने उछलकर उसे पकड़ा
भूखा था कई रोज़ से, अब हाथ जो आई
आराम से घर बैठ के, मक्खी को उड़ाया।

शब्दार्थ:
ख़ुशामद - झूठी तारीफ़
कनियाँ = टुकड़े

कार्टून बनाना
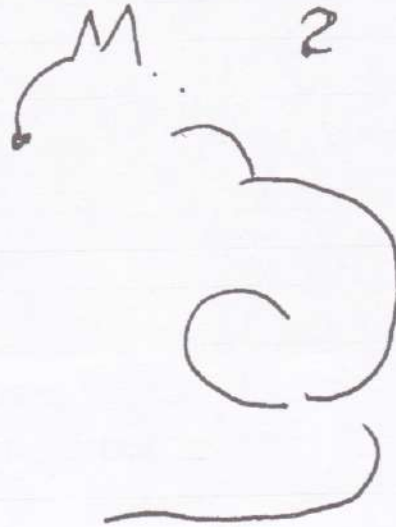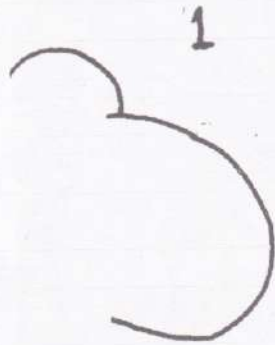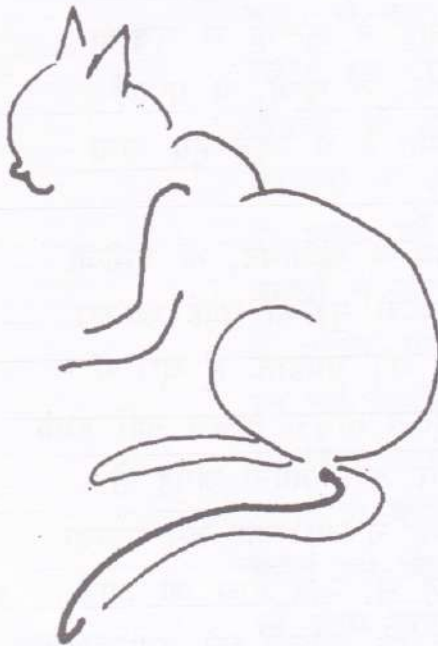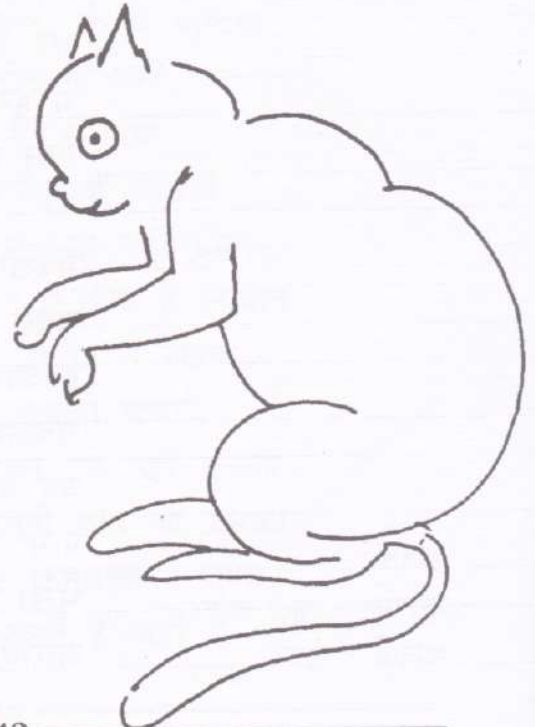
बालकूची
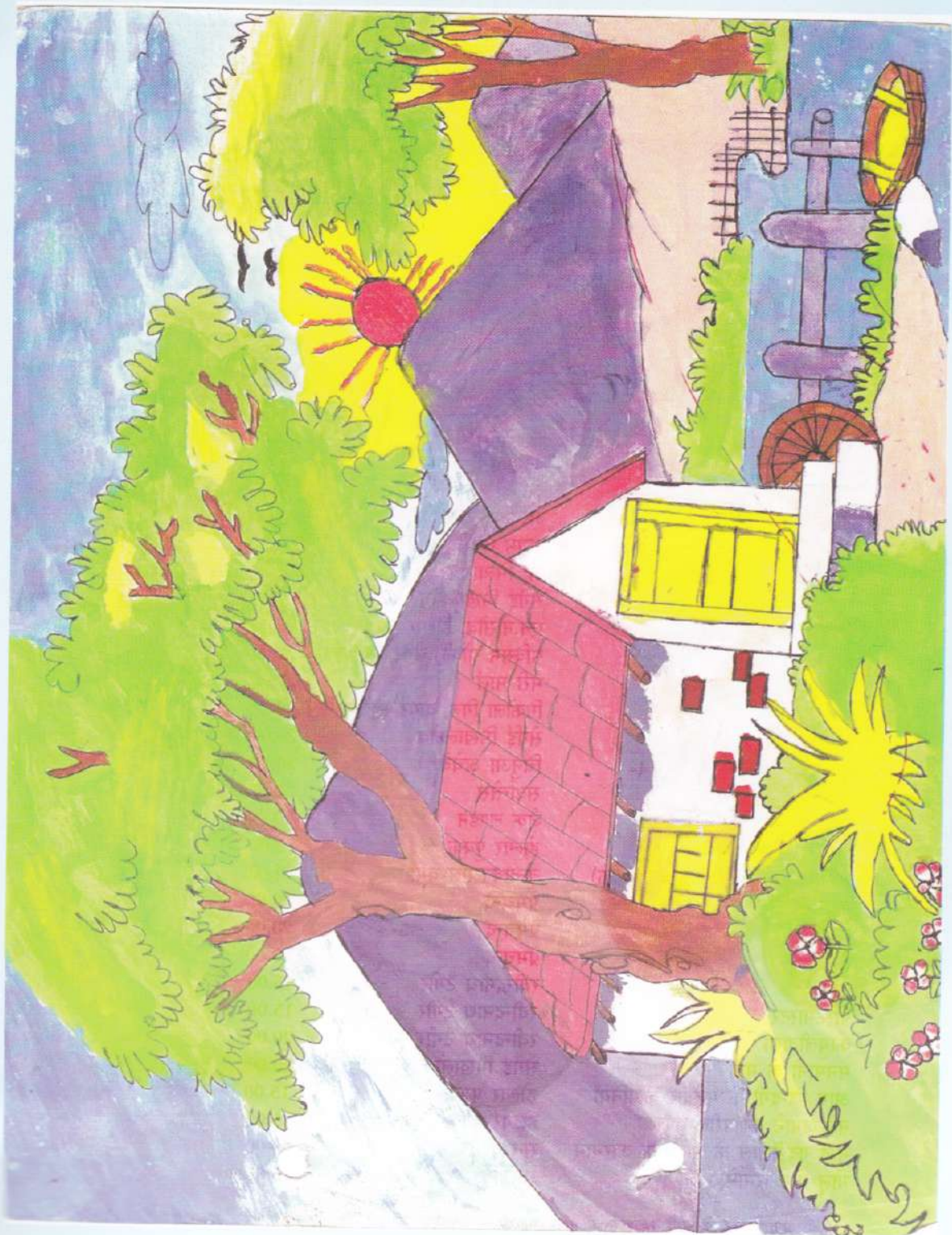
चित्रकार : दिव्यांशी
कक्षा 7, उम्र 11 वर्ष, लखनऊ

Title Code UPHIN44502/24-10-2013

अनुराग बाल पुस्तकालय

मनोरंजक, ज्ञानवर्द्धक, उत्कृष्ट पुस्तकों का संग्रह, कला, साहित्य, संस्कृति, विज्ञान, खेलों आदि पर रोचक किताबें और पत्र-पत्रिकाएँ, प्रेरक जीवनियाँ, देश-विदेश का चुनिन्दा बढ़िया साहित्य

अनुराग ट्रस्ट

सोमवार से शनिवार, दिन 12 से रात 8 बजे तक
डी-68, निरालानगर, लखनऊ-226020

अनुराग ट्रस्ट की दिलचस्प किताबें पढ़ो!

सच से बड़ा सच	रवीन्द्रनाथ ठाकुर	25.00
गुड़ की डली	कात्यायनी	20.00
धरती और आकाश	अ. वोल्कोव	120.00
नीला प्याला	अरकादी गैदार	40.00
गड़रिये की कहानियाँ	क़यूम तंगरीकुलीयेव	35.00
चींटी और अन्तरिक्ष यात्री	अ. मित्यायेव	35.00
अन्धविश्वासी शेकी टेल	सेर्गेई मिखाल्कोव	20.00
चलता-फिरता हैट	एन.नोसोव, होल्गर पुक्क	20.00
गधा और ऊदबिलाव	मक्सिम गोर्की, सेर्गेई मिखाल्कोव	20.00
गुफा मानवों की कहानियाँ	मैरी मार्स	20.00
हम सूरज को देख सकते हैं	मिकोला गिल, दायर स्लावकोविच	20.00
मुसीबत का साथी	सेर्गेई मिखाल्कोव	20.00
आकाश में मौज-मस्ती	चिनुआ अचेबे	20.00
आश्चर्यलोक में एलिस	सर्वान्तेस	30.00
जिन्दगी से प्यार	जैक लण्डन	30.00
अजीबोगरीब किस्से	होल्गर पुक्क	15.00
झाँसी की रानी लक्ष्मी बाई (नाटक)	वृन्दावनलाल वर्मा	30.00
गुल्ली-डण्डा	प्रेमचन्द	20.00
रामलीला	प्रेमचन्द	20.00
लॉटरी	प्रेमचन्द	20.00
तोता	रवीन्द्रनाथ टैगोर	15.00
पोस्टमास्टर	रवीन्द्रनाथ टैगोर	15.00
काबुलीवाला	रवीन्द्रनाथ टैगोर	20.00
मनमानी के मजे	सेर्गेई मिखालोव	20.00
आम जिन्दगी के मजेदार कहानियाँ	होल्गर पुक्क	15.00
नये जमाने की परीकथाएँ	होल्गर पुक्क	15.00
नन्हे गुदड़ीलाल के साहसिक कारनामे	सुन यओच्युन	40.00
गोलू के कारनामे	रामबाबू	15.00

अनुराग ट्रस्ट के सभी प्रकाशनों के मुख्य वितरक – जनचेतना, डी-68, निरालानगर, लखनऊ-226020
जनचेतना, 114, जनता मार्केट, रेलवे बस स्टेशन रोड, गोरखपुर-273001
अनुराग ट्रस्ट की सभी पुस्तकों की सूची के लिए इस वेबसाइट पर जाएँ : janchetnabooks.org